'रेनाल्ट" ग्रन्थ माला—सं० १

किले की रानी



अनुवादक

वा० गंगाप्रसाद गुप्त,

"रेनाल्ड" ग्रन्थ माला-संख्या १

किले की रानी

रेनाल्ड साहब के "दि यङ्ग फिशरमैन"
नामक उपन्यास का भाषानुवाद

अनुवादक—बा० गंगा प्रसाद गुप्त



दुर्गा प्रसाद खत्री

प्रोप्राइटर लहरी बुकडिपो-काशी

द्वारा प्रकाशित

तृतीय बार] १९२५ [मूल्य—।।।)

॥ श्रीः ॥

किले की रानी



पहिला बयान

एक झील के चारों तरफ वे छोटी छोटी पहाड़ियां चली गई हैं जिनके भद्दे पन को छिपाने के लिये कहीं कहीं प्रकृति ने हरी हरी घास लगा दी है, लेकिन कोई कोई ऐसी पहाड़िया भी हैं जो बिल्कुल ही सूखी हैं और जिन पर हरियाली का कहीं नाम भी नहीं है। यह पहाड़ी सिलसिला कहीं कहीं इतना ऊंचा हो गया है कि उसकी पथरीली चोटियां हरियाली से छिपी न रहने के कारण बहुत ही भद्दी लगती हैं, परन्तु बहुत सी ऐसी भी हैं जिन पर उगी हुई लम्बी लम्बी घास ठण्डी ठण्डी पहाड़ी हवा के थपेड़ों से हरदम लहलहाती हुई बहुत मनोहर मालूम होती है।

झील के पश्चिमी किनारे पर पहाड़िया बहुत ऊंची हो गई हैं, लेकिन पूरबी किनारे पर यह बात नहीं है अर्थात्

पहाडी सिलसिला ढालू होते होते इतना नीचा हो गया है कि सरपट मैदान के बिल्कुल बराबर पहुँच गया है।

वहां पर एक छोटा सा गाँव था जिसमें मछली वाले रहा करते थे। उन मछली वालों को भर पेट अन्न मिल जाता था क्योंकि झील में मछलियां बहुत थीं जिनको वे बरोडल नामक एक कसबे में जो उनके गाव से करीब चार मील की दूरी पर था, ले जा कर अच्छी तरह बेच सकते थे।

जिस झील का जिक्र हम अपने पाठकों से कह रहे हैं उसका नाम डेलामीर था। यह तीन मील लम्बी और करीब एक मील चौडी होगी। मछली वालों के कसबे के सामने अर्थात् झील के पश्चिमी किनारे पर जिधर पहाडों की चोटियां खूब ही ऊंची हो कर झील की हदबन्दी कर रही हैं सब से ऊंची चोटी पर एक इमारत बनी हुई थी, जो बहुत खूबसूरत तो नहीं लेकिन मजबूत खूब थी। यह इमारत जिस पहाडी पर बनी थी उसके नीचे का हिस्सा पानी के अन्दर तक चला गया था बल्कि अगर इमारत के पिछले हिस्से से कोई चीज दूसरी तरफ फेंकी जाती तो वह आ कर अवश्य झील के अन्दर गिरती। इस इमारत या छोटे किले का वह हिस्सा जो झील की तरफ था अपनी पुरानी और टूटी फूटी सूरत दिखा कर मानो कह रहा था कि किसी के दिन एक तरह नहीं बीतते लेकिन वह हिस्सा जो दूसरी तरफ था बहुत ही भला मालूम पड़ता था।

इस इमारत का सदर दर्वाजा भी उसी दूसरी तरफ था जिधर एक सडक दूर तक पहाडी घाटियों में चक्कर खाती हुई निकल गई थी। इस सडक के दोनों तरफ दूर दूर तक की जमीन इसी इमारत के मालिक की समझी जाती थी।

किले के पीछे कई डोंगियां उस पहाडी के नीचे बंधी रहती थीं जिस पर यह किला बना हुआ था और उसी जगह से सीढियों का एक सिलसिला किले के अन्दर तक चला गया था ताकि अगर किसी को झील की सेर करने की इच्छा हो तो उन्हीं सीढियों से उतर कर डोंगी पर सवार हो जाय।

झील के किनारे वाली पहाडियां अपने ऊपर उगी हुई सब्जी की हरियाली हरदम झील के साफ पानी में देखा करती थीं सुबह के वक्त लम्बी लम्बी हरी हरी सब्ज घास का हवा के झोंके खा कर लहलहाना और उन पर से रात भर पडी हुई ओस की बूंदों का टप टप टपकना बिडा सुहावना मालूम पडता था।

हम अपने पाठकों से यह भी कह देना जरूरी समझते हैं कि हमारी कहानी उस वक्त से शुरू होती है जब दूसरा चार्ल्स जिसको लोग 'मेरी मानर्क' अर्थात् येशपसन्द बादशाह कहा करते थे इंगलण्ड का बादशाह था।

सन् १६८२ ई० की बात है कि एक दिन शाम के वक्त किले के उस तरफ के कमरे में जो झील की तरफ था, एक बहुत ही खूबसूरत लडकी खिडकी के पास बैठी इधर उधर

देख कर अपना जी बहला रही है। यह कमरा जिसमें यह सुन्दरी बैठी है एक बड़े आंगन से मिला हुआ है, जिसको पहाडी पौधों ने और भी सजा दिया है। कमरे के दर्वाजे खुले हुए हैं और बाहर आंगन में लगे हुए फूलदार पौधे दिखाई देते हैं।

इस लडकी की उम्र १६ वर्ष से ज्यादा नहीं होगी। इसकी खूबसूरती और भोलेपन के बारे में बहुत बातें बनाना बेफायदे हैं, इतना ही कहना काफी होगा कि इसके खुशबूदार चमकीले बाल कुछ तो पीठ की तरफ बिखरे हुए हैं और कुछ छाती के ऊपर से होते हुए पतली कमर तक चले गए हैं। इसकी बडी बडी चमकीली आखें मन को मोह लेने वाली हैं और अङ्गरेजी पोशाक इसके सुडौल बदन पर बहुत ही भली लगती है।

यह लडकी अपने कोमल हाथ का सहारा किये बैठी सब तरफ का दृश्य देख रही है। हम नहीं कह सकते कि यह बेपर्वाही से केवल पहाडियों और झील की शोभा ही देख रही है या इसकी निगाह किसी खास चीज को दूर तक ढूंढती हुई चली जाती है और फिर अपना मतलब न पा कर नाउम्मीद हो लौट आती है।

यह इस समय अपने ध्यान में उसी तरह डूबी हुई थी कि उसी कमरे के एक तरफ का दर्वाजा खुला और एक बुढ्डा आदमी अन्दर चला आया, लेकिन इसको खबर भी न हुई। बुड्ढे की उम्र साठ वर्ष के लगभग होगी। उसका बदन देखने

में कमजोर मालूम पड़ता था। हमें यह भी कह देना चाहिये कि इस आदमी का नाम "सर माइलिज कोर्टलेण्ड" था और यही इस किले का मालिक था तथा यह सोलह वर्ष की नौजवान खूबसूरत लडकी जिसका नाम फ्लोरा था इसकी इकलौती बेटी थी, जिसके पैदा होने के कुछ ही दिनों के बाद उसकी प्यारी मां मर गई थी।

लडकपन ही में मा मर जाने के कारण खूबसूरत फ्लोरा जानती ही न थी कि मा की मुहब्बत क्या चीज है, लेकिन कुशल यह था कि उसकी एक चाची थी जिसने उसको अपनी ही बेटी की तरह पाला था और बहुत प्यार करती थी, मगर वह बुढिया भी चार पांच वर्ष हुए इस दुनिया से चल बसी थी। मरते वक्त भी उसने यही कहा कि "हाय! मैं अपनी भतीजी की भरी जवानी न देख सकी।"

यह तो हम पहिले ही कह चुके हैं कि जिस समय "सर माइलिज कोर्टलेण्ड" कमरे में दाखिल हुआ फ्लोरा को उसके आने की आहट भी नहीं मालूम हुई थी, यहां तक कि जब सर कोर्टलेण्ड ने आ कर फ्लोरा के कन्धे पर हाथ रख दिया तो खूबसूरत फ्लोरा यकायक चौंक पडी और बोली।

फ्लोरा०। अहा! पिता जी आप हैं? ओहो! मैं कैसी डर गई!!

सर को०। प्यारी बेटी! तुम इतनी सोच में क्यों डूबी थीं?

सर कोर्टलेण्ड ने यह बात बड़े प्यार से कही थी मगर उसके बात करने के ढंग से मालूम होता था कि उसके बात में वह सच्ची मुहब्बत नहीं है जो मां बाप को अपनी सन्तान के साथ होनी चाहिये। थोड़ी देर ठहर कर वह फिर बोला—

सर को०। मैं नहीं समझ सकता कि वह कैसा ध्यान था जिसमें तुम इतनी डूबी हुई थीं कि मैं कमरे में चला आया और तुमको आहट भी नहीं मालूम हुई !!

फ्लोरा०। (रुक रुक कर) पिता जी! क्या मैं अपने ध्यान में . डूबी हुई

यह कहते कहते उनके चेहरे का रंग एकबारगी बदल गया। जान पड़ता था कि उसका जी बहुत घबरा रहा है।

सर को०। हां हां कहता तो हूं कि तुम अपने ध्यान में डूबी हुई थीं, लेकिन इसका सबब . खैर यह कोई ज्यादा ताज्जुब की बात नहीं है।

फ्लोरा कुछ घबरा कर अपने बाप की तरफ गौर से देखने लगी मगर उसकी यह घबराहट बहुत जल्द दूर हो गई। उसने अपने जी को सम्हाला और चुप हो गई।

सर को०। तुम्हारी घबराहट भी ठीक ही है। कोई कब तक चुपचाप अकेले में बैठा रहे। यह सुनसान मकान जिसमें मुद्दत के बाद कभी मेहमानों के आ जाने से चहल पहल हो जाया करती है या कभी उन दोस्तों की मुलाकात से यों ही सी रौनक हो जाती है जो बहुत दूर रहने के कारण जल्दी आ

भी नहीं सकते हैं और फिर वस्ती से भी बहुत दूर एक पहाड़ पर! बेशक ऐसी जगह तुम्हारे रहने के लायक नहीं है। अगर तुम यह चाहती हो कि अपनी बराबर वालियों से मिलें जुलें तो उसका बन्दोबस्त यहां हो सकता है और यदि लंदन जाने को तुम्हारा जी चाहता हो तो कुछ दिनों के लिए वहीं चली जाओ। वहां दरबारी औरतों से मेल मुलाक़ात पैदा करना या जिससे तुम्हारा जी चाहे मिलना इससे तो अच्छा होगा कि हर वक्त उदास रहती है।

फ्लोरा०। पिता जी! आप मेरे मन का ठीक ठीक हाल न जान सके, नहीं तो कभी ऐसा न कहते। दरबारी सुन्दरियों की मुलाकात से मेरा जी नहीं बहल सकता, उनके साथ दोस्ती करना मैं नहीं चाहती।

को०। खैर इसमें कुछ हर्ज नहीं है। तुम्हें यहां बैठाये रखने से मेरा यही मतलब है कि अगर कोई अच्छे खान्दान का लड़का मिले तो उसके साथ तुम्हारी शादी कर दूं। तुम घबरा क्यों गई? जान रक्खो यही वक्त है कि इस काम के वास्ते तन मन और धन तीनों से कोशिश की जाय।

फ्लोरा०। प्यारे पिता

यह कहते कहते फ्लोरा की आवाज रुक गई, लेकिन उसने फिर अपनी तबीयत को सम्हाला और कहने लगी,—

फ्लोरा०। यह आप क्या कहते हैं? मुझ से चाहे जो कसम ले लीजिये, मुझको इसका जरा भी ध्यान नहीं है।

आह ! आप के मुंह से ऐसी बातें ! मुझे बहुत दुःख होता है। क्या आप यह चाहते हैं कि आपकी चाहने वाली बेटी आप से अलग हो जाय ?

कोर्ट०। बेटी ! यह तुम्हारा लड़कपन है। सोचो तो कि बाप का धर्म्म है कि वह अपनी सन्तान को सुखी रक्खे और यह उसके लिये सब से पहिली बात है कि वह अपनी लड़की के लिये कोई लायक और होनहार. .....

फ्लोरा०। (ज़ोर दे कर) लेकिन लड़की का भी धर्म्म है कि वह अपने मां बाप का साथ दे चाहे वे कैसी ही हालत में हों और फिर ऐसी अवस्था में जब कि लड़की के जुदा होने से न उनकी कोई सेवा करने वाला ही रह जाय और न उनके दुःख से दुःखी होने वाला। कोई ऐसा भी न रहे जो बीमारी में वक्त पर दवा दे और धीरज धरावे, फिर ऐसी हालत में यह कैसे हो सकता है कि मैं आप से जुदा होऊं ?

सर कोर्टलैण्ड ने फ्लोरा के चेहरे को गौर की निगाह से देखा ताकि उसके उतार चढ़ाव से दिल के भीतर का हाल मालूम कर ले और तब धीरे से कहा—

को०। लेकिन सुनो तो सही। मान लो तुम्हारी शादी किसी ऐसे आदमी से हो जो यहां से थोड़ी ही दूर पर रहता हो और तुम कभी कभी यहां आ जाया करो तब तो कुछ हर्ज न होगा ?

फ्लोरा०। (घबरा कर) आप इस बात को जाने दीजिये, कोई दूसरी बात कहिये।

कोर्ट॰। नहीं, इस वक्त तो मैं यही सलाह करने आया हूं। मैं तो बहुत दिनों से चाहता था कि कुछ कहूं लेकिन मौका न पा कर चुप हो रहा था कि शायद तुमको रंज हो।

फ्लोरा के चेहरे से फिर वही घबराहट बरसने लगी और उसका नाजुक दिल फिर धड़कने लगा। वह ध्यान दे कर अपने बाप की बातें सुनने लगी।

कोर्ट॰। प्यारी बेटी तुम जानती हो कि मैं बहुत कमजोर हू और दिन पर दिन गिरता ही जाता हू, फिर तुम्हीं बताओ कि जिन्दगी का कौन ठिकाना? आह! उस वक्त को कौन बता सकता है जब हमेश के लिये मैं तुमसे जुदा होऊंगा। इस-लिये मैं चाहता हू कि इससे पहिले कि मैं इस दुनिया को छोड़ूं तुम्हारे आराम का बन्दोबस्त करता जाऊं।

फ्लोरा ने अपने प्यारे बाप का हाथ अपने हाथ में लिया और आसू उसके गुलाबी गालों पर ढुलक आये।

कोर्ट॰। हैं हैं तुम रोती क्यों हो? बस, अपने आसू पोछो मुझको दुःख होता है। आदमी जरूर ही मरता है, एक न एक दिन सब ही मरेंगे—लेकिन आह! अगर मैं तुमको सुखी देख लेता तो मेरी आखें आराम से हमेशा के लिये बन्द हो जातीं। (यकायक कुछ सोच कर) हा, यही वक्त है कि छिपे भेद खोले जायँ . लेकिन गैर

फ्लोरा॰। (आसू पोंछ कर बेचैनी के साथ) वे कौन से भेद हैं?

कोर्ट०। तुम जानती हो कि लोग मुझे वडा दौलतमन्द समझते हैं, लेकिन अगर सच पूछो तो दौलतमन्द होना तो दूर मैं तो इस लायक भी नहीं हूँ कि ओसत् दर्जे के लोगों में गिना जाऊं।

फ्लोरा०। (ताज्जुब से) क्या आप इस किले और सब जायदाद के मालिक नहीं हैं?

कोर्ट०। (सिटपिटा कर) नहीं, मालिक तो मैं जरूर हूं लेकिन .

फ्लोरा०। आह! अब मैं समझी! शायद आपके कहने का मतलब यह है कि जब आप न रहेंगे तो यह जायदाद मुझको न मिलेगी मगर मुझे इसकी कुछ पर्वाह नहीं है। मेरे प्यारे पिता! मैं गरीबी को ज्यादा पसन्द करती हूँ लेकिन

कोर्ट०। लेकिन क्या?

फ्लोरा का नाजुक दिल धड़कने लगा परन्तु उसने अपने को बहुत सम्हाल कर धीरे से कहा—

फ्लोरा०। लेकिन यह कि मैं आगे के लिये अपना फायदा न सोच कर ब्याह करना या अपना हाथ किसी ऐसे आदमी के हाथ में दे देना जो मुझको प्यारा न लगता हो नहीं चाहती।

फ्लोरा कहने को तो कह गई लेकिन शर्म के मारे उसके प्यारे फूल से गालों पर पसीना आ गया और वह चुप हो गई।

कोर्ट०। यह कोई जरूरी बात नहीं है कि मेरे बाद यह

जायदाद तुमको न मिले, परन्तु हा कर्ज का बोझ न होना चाहिये।

फ्लोरा०। फिर आप मेरे वास्ते इतना क्यों हैरान होते हैं? आपकी ऐसी इच्छा क्यों होती है कि चाहे जो कुछ हो मेरा व्याह जल्द हो जाय?

फोर्ट०। तो तुम चाहती हो कि मैं साफ साफ खोल कर कह दू? अच्छा सुनो, बिना कहे काम भी नही चल सकता। तुम जानती हो कि मैं बादशाह चार्ल्स (पहिला) का बड़ा खैरख्वाह था, इसलिये उसकी तरफ से लड़ाई के समय मैंने फौज की तैयारी में अपना सब धन खर्च कर डाला। जब बादशाह हार गया और मारा गया तो मुझको भी वहां से भागना पड़ा, उस समय कौन ऐसा था जो मेरी मदद करता? लेकिन नहीं, एक आदमी ने मुझ पर रहम खाया और मैं भूखों मरने से बच गया।

फ्लोरा०। शायद आप उस बुड्ढे की बात कहते हैं जिसका नाम मास्टर टिलबर्न था और जिसके मरने की खबर उस दिन आई थी? उसका एक लड़का भी तो है, जिसका नाम टेनी टिलबर्न है। मैं कुछ बुरे विचार से नहीं कहती, परन्तु मुझको उन बाप बेटों की चाल अच्छी नहीं लगती और खास कर टेसी बड़ा दुष्ट है।

फोर्ट०। (कुछ गुस्से में आ कर) चुप रहो फ्लोरा, चुप रहो! तुम उस आदमी की बुराई करती हो जो बहुत ही

भोला और सीधा है ।

फ्लोरा० । मैंने कोई झूठी बात नहीं कही और आप ही के सामने उसकी निन्दा की, नहीं यों तो जब कभी वह यहां आता है मैं उससे इज्जत का वर्ताव करती हूं ।

कोर्ट० । यह तो मैं जानता हूं कि तुम्हारा स्वभाव बहुत ही सीधा है और तुम मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करतीं, परन्तु हां, मैं क्या कह रहा था ?

फ्लोरा० । यही बादशाह के मारे जाने पर अपने भागने का हाल ।

कोर्ट० । हां, ठीक कहा, तो मैंने उससे रुपये उधार लिये । तब से आमदनी एक कौडी की नहीं हुई, लेकिन खर्चा बराबर होता रहा, इसी से मैं उसका रुपया दे नहीं सका । सूद बराबर चढता गया और अब वह इतना हो गया है कि मैं दे नहीं सकता, फिर तुम्ही सोचो कि उसका लडका जब चाहेगा यह सब जायदाद ले लेगा ।

फ्लोरा० । क्या उसका लडका रुपये मांग रहा है ?

कोर्ट० । (फ्लोरा के चेहरे की तरफ गौर से देख कर जैसे कोई कुछ पूछना चाहता है) नहीं, उसने मुझ को कुछ भरोसा दिलाया है । वह बडे खान्दान का लडका है ।

फ्लोरा० । (ताज्जुब से) क्या ! मामूली महाजन का लडका बडे खान्दान का ? यह आप क्या कहते हैं !

कोर्ट० । कैसी बातें करती हो ! यह वह समय है कि बस

रुपया ही धड़ा खान्दान है। जिसके पास धन नहीं है उसको कोई नहीं पूछता। देखो ट्रेमी ट्रिलवर्न जब यहां आवे तो तुम उसके साथ इज्जत का वर्ताव करना, बल्कि हां तो सुना तुमने लेकिन खैर, मुझको ज्यादा कहने की क्या जरूरत है, तुम आप ही समझ गई होगी।

फ्लोरा०। पिता जी !!

यह एक चीख थी जो उसके मुंह से निकल गई। उसको तरह तरह की बातें सूझने लगीं, लेकिन शाम की अन्धियारी के कारण उसके चेहरे का रङ्ग उसका बाप न देख सका।

कोर्ट०। हैं! झील में यह रोशनी कैसी हो रही है !!

फ्लोरा०। क्या! रोशनी?

कोर्ट०। हां हां वह देखो सामने।

फ्लोरा उस तरफ देख कर बोली, "हां ठीक तो है! यह रोशनी कैसी?"

कोर्ट०। अहा, अब मैं समझ गया।

फ्लोरा०। क्या? पिताजी! आप क्या समझे? मुझसे भी कहिये।

कोर्ट०। कुछ नहीं, यही कहता था कि यह रोशनी मैंने पहिले भी कई दफे देखी है, इससे कह सकता हूं कि इस समय कुछ धोखा नहीं हुआ।

फ्लोरा०। आखिर यह है क्या? (चौंक कर) अरे! यह तो बुझ गई!!

कोर्ट० । मैंने इस रोशनी को कई बार देखा है, लेकिन रात का वक्त होने के सबब से मैं कुछ न जान सका कि यह क्या है। मैं समझता हूं कि शायद कोई धीमर होगा लेकिन आश्चर्य्य है! मछली पकड़ने के वास्ते रोशनी की क्या जरूरत थी परन्तु हां, एक बात मेरे ध्यान में आती है, वह यह कि शायद वह सन्दूक· लेकिन उसके निकालने की कोशिश बेफायदे है। जब बहुत खोजने पर भी मुझको नहीं मिला तो भला किसी और को क्या मिलेगा।

फ्लोरा० वह कैसा सन्दूक था पिता जी! मैं ने आपसे कई बार पूछा, परन्तु आप ने कुछ साफ साफ नहीं बताया?

मि० को० । (लम्बी सांस ले कर) सुनो, कर्नल ब्लण्डफोर्ड मेरा चचेरा भाई था। हम दोनों में बचपन से बड़ी दोस्ती थी। जब बड़े हुए तब भी हम दोनों फौज में साथ ही रहे। बादशाह पहिले चार्ल्स के मारे जाने पर वह भी हमारे साथ भाग कर यहां आया। एक दिन वह बहुत बीमार हो गया और उसके बचने की कोई उम्मीद न रही तो उसने अपनी प्यारी स्त्री को जिसके साथ ब्याह किये चार ही वर्ष बीते थे छाती से लगा लिया और अपने दो वर्ष की उम्र के छोटे बच्चे आर्थर का मुंह चूम कर कहने लगा, "हे ईश्वर! तू ही इनका मालिक है, मैं तेरी ही हिफाजत में इनको छोड़ कर जाता हूं।" वह इतना भी नहीं कहने पाया था कि उसका गला बैठ गया, लेकिन वह थोड़ी देर दम लेकर ठहर ठहर कर अपनी स्त्री से कहने

लगा, "मैं तो मरता हू कुछ ही मिनट की कसर है जो मैं कहता हू उस पर अमल करो झील के पास पार बलूत के सब से ऊ चे पेड़ के नीचे मैंने एक सन्दूक उसमें दस हजार अशर्फियां हैं खोला नहीं जाता " बस वह इससे ज्यादे कुछ न कह सका और मर गया।

फ्लोरा०। हाय ! बेचारी जवान स्त्री और छोटे बच्चे का क्या हाल हुआ होगा ! लेकिन उसने अशर्फियां कहां पाई थीं?

मि० को०। गांव में एक बहुत ही बुड्ढा आदमी रहता था। ब्लणडफोर्ड उसके पास बहुत आया करता था। मेरी समझ में वह अशर्फियों से भरा सन्दूक उसी बुड्ढे ने ब्लणडफोर्ड को दिया होगा मगर न मालूम उसने उसको वहां क्यों छिपा रक्खा था।

फ्लोरा०। उसके मरने के बाद उसकी स्त्री ने क्या किया?

मि० को०। मेरी मदद से कब्र खोद कर अपने पति की लाश गाड़ने के बाद वह रात के वक्त मय अपने छोटे बच्चे के डोंगी पर चढ़ कर सन्दूक निकालने के लिये झील के दूसरे किनारे की तरफ चली। उस वक्त मैं उसके साथ था। सचमुच पेड़ के नीचे खोदने पर हमलोगों को एक भारी सन्दूक मिला। सन्दूक को लेकर हम सब इस किले की तरफ लौटे, लेकिन यकायक वह डोंगी किसी चीज से टकरा कर उलट गई और हम सब पानी में गोते खाने लगे। बड़ी तकलीफ

से डूबता उतराता हुआ किसी तरह मैं तो किनारे आ लगा लेकिन अफसोस ! कर्नल की जवान और खूबसूरत जोरू और उसके छोटे बच्चे तथा अशर्फियों से भरे सन्दूक का कहीं पता न लगा। उसी वक्त झील में जाल डलवाये पर कुछ काम न निकला।

फ्लोरा को यह सुन कर बहुत दु:ख हुआ। अभी तक तो अन्धियारी ने झील और पहाड़ों के दृश्य को छिपा रक्खा था, लेकिन यकायक निकल आने वाले चांद की रुपहली चांदनी ने अब चारों तरफ रोशनी कर दी। भद्दी चीजें भी इस सुहावनी रात में अच्छी लगने लगीं। झील पर जो चांद का अक्स पड़ा तो कुछ अजब रङ्ग दिखाई देने लगा। पानी की हलकी लहरें जो हवा के कारण लहरा रही थीं चांद की रोशनी पड़ने से जगमगाने लगीं। मिस्टर कोर्टलैण्ड और फ्लोरा ने जो आंख उठा कर देखा तो झील में डोंगी पर एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। चांद की उजियाली में दोनों ने उसकी सूरत भी अच्छी तरह देख ली। वह एक खूबसूरत और नौजवान आदमी था। मिस्टर कोर्टलेण्ड ने उसको पहिचान कर कहा,

कोर्ट०। आह ! यह तो वही धीमर है जो बहुत दिनों से मछली वालों के गांव में रहता है। क्या यही उस सन्दूक को निकालना चाहता है ? लेकिन यह उसका हाल क्या जाने।

फ्लोरा०। आपने क्या कहा ?

कोर्ट०। कुछ नहीं। वह देखो वह हमलोगों को सलाम

कर रहा है ।

नौजवान धीमर ने अपनी टोपी सिर से उठाई और सलाम कर अपनी डोंगी का मुह फेर कर ले चला। इतने में नौकर ने आ कर कहा, "सर्कार! भोजन तैयार है" जिसे सुन फ्लोरा वहा से उठ कर अपने बाप के साथ भोजन के कमरे में चली गई।

दूसरा बयान

दूसरे दिन सुबह को एक आदमी मछली वालों के गाव की तरफ से आता हुआ दिखाई दिया। झील के किनारे पर पहुच कर वह एक डोंगी पर सवार हुआ जो और डोंगियों से मजबूत और खूबसूरत थी। उस आदमी की उम्र कोई बीस या बाईस वर्ष की होगी। उसके कपड़े बहुत कीमती तो न थे, परन्तु साफ थे और उसके सुडौल बदन पर भले लगते थे। उसके चेहरे से ईमानदारी और भलाई झलकती थी, लेकिन साथ ही कुछ पीलापन बता रहा था कि उसको दिन रात किसी बात की फिक्र लगी रहती है। वह कभी कभी एक ठण्डी सास ले कर अफसोस की निगाह से इधर उधर देख लेता था।

उसका नाम हूबर्ट फारेष्टर था। वह डोंगी को झील में कुछ दूर तक सीधे ले जा कर उत्तर तरफ मुड़ा और जाते जाते डोंगी एक ऐसी जगह पहुँची जहा झील की चौड़ाई

बहुत कम थी और किनारे किनारे गुञ्जान तथा अन्धेरी झाडियां दूर तक चली गई थीं। डोंगी उसी जगह पहुँच कर ठहर गई और हूबर्ट उतर कर झाडियों की ओर चला। जाते जाते थोडी दूर पर उसे किसी औरत की झलक दिखाई दी। देखते ही उसका दिल खुशी से धड़कने लगा, पांव जल्दी जल्दी उठने लगे और पास पहुँच कर जब उसने एक खूबसूरत तथा जवान औरत को खडे देखा तो उसका चेहरा खुशी से दमकने लगा। वह गहरी निगाह से उसकी तरफ देखने लगा और उसकी आखों ने इशारे ही इशारे में कह दिया कि "तुम जमीन पर क्यों खडी हो ? तुम्हारी जगह तो मेरे दिल में है।" वह कुछ हिचकता हुआ आगे बढा।

औरत०। (उसको रुकता देख कर प्यार से) यह क्या ! तुम रुक क्यों रहे हो ? क्या मैं यह नहीं कह चुकी हू कि मैं तुमको प्यार करती हू ? लेकिन हाय ! दिल भी क्या चीज है ! इस पर किसी का अधिकार नहीं है। देखो पिता जी मेरे ऊपर कैसा भरोसा करते हैं अगर उनको यह हाल मालूम हो जाय तो मुझको कैसा दगाबाज समझें ?

हूबर्ट०। (आगे बढ और उसका हाथ पकड कर) प्यारी फ्लोरा ! मैं यह नहीं कह सकता कि तुम मुझसे मुहब्बत करो परन्तु मैं अपना दिल तुमको दे चुका, अब यह दूसरे का नहीं हो सकता।

फ्लोरा०। लेकिन सुनो तो सही, क्या तुम्हें इसका शक

नहीं है कि जो लडकी अपने से दगाबाजी का बर्ताव करे वह तुम्हारी स्त्री बन कर तुमको धोखा न देगी ?

हूबर्ट०। नहीं मैं ऐसा नहीं सोचता क्योंकि मैं खूब जानता हूं कि खास मेरी मुहब्बत के कारण तुमने इस भेद को अपने बाप से छिपाया है।

फ्लोरा०। हां अब तुम जो चाहो सो समझो। मैं तुम्हारे साथ शादी करने का तुमको भरोसा दिला कर पछताती नहीं हूं, मैं तो आप ही अपना दिल तुमको दे चुकी हू लेकिन यदि तुम यह जान जाते कि

हूबर्ट०। हां क्या कहा ? वह कौन सी बात है जिस का जानना मेरे लिये जरूरी है ? क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि तुमको मेरी मुहब्बत का भेद छिपाने में बडी तकलीफ उठानी पडती है ? यह तो मैं जानता हू। हे ईश्वर ! तू हमलोगों पर दया कर। यह प्यारा हाथ जो इस समय मेरे हाथ में है क्या मेरा न होगा ? खैर ! अगर किस्मत में ऐसा ही लिखा है तो कुछ परवाह नहीं। मै अपनी जिन्दगी इसी उम्मीद में बिता दूंगा कि कभी तो तुम मेरी होगी। मेरे मर जाने पर भी तुम्हारा ध्यान मेरी आत्मा के साथ साथ फिरा करेगा।

फ्लोरा०। (आखो में आसु भर कर) तुम कैसी दर्दनाक बातें करते हो ! ईश्वर वह दिन न दिखावे। प्यारे हूबर्ट ! मैं तुम्हारी हू, हमेश तुम्हारी ! अच्छा बताओ तुम्हें कुछ रात की बात भी याद है ?

हूवर्ट० । क्या ?

फ्लोरा० । यह तो तुम्हें मालूम है कि रात को जब तुम अपनी डोंगी पर सवार थे तो चांद की रोशनी में मैंने तुम्हें देखा था, और जब झील में कुछ रोशनी हुई थी तो मैं समझ गई थी कि हो न हो यह तुम्हारी डोंगी है ।

हूवर्ट०। हां, जब रात को अंधियारी हर तरफ छाई हुई थी तो मैं डोंगी में सवार हो कर किले के पास इधर उधर फिर रहा था ताकि दूर ही से तुम्हारे प्यारे चेहरे की एक झलक देख सकूँ ।

फ्लोरा० । मैं किस मुह से तुम्हारे इस प्रेम का धन्यवाद दूं, लेकिन तुमने अपनी डोंगी में रोशनी क्यों की थी ?

हूवर्ट०। क्या तुम नहीं जानतीं कि उस वक्त ओस पड़ने के कारण अँधियारी छाई हुई थी और हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था ।

फ्लोरा० । खैर यही सही लेकिन ....

हूवर्ट० । आखिर तुम साफ साफ क्यों नहीं कहतीं ? जरूर तुम्हारे मन में कोई भेद है जिसको तुम खोलना नहीं चाहतीं । बताओ वह क्या बात है ?

फ्लोरा० । पिता जी उस समय मेरे पास ही बैठे थे ।

हूवर्ट० । हां उन्हें तो मैंने भी देखा था और सलाम भी किया था, मगर उनको मेरी तरफ से कुछ शक तो नहीं हुआ कि मैं ऐसे वक्त में किले के पास क्यों आया हूं ।

फ्लोरा० । नहीं, क्योंकि उन्हें कुछ शक होता तो जरूर कहते ।

हूवर्ट० । हां तो फिर वह क्या कहते थे ?

फ्लोरा० । वह कहते थे कि शायद तुम उस खोए हुए सन्दूक को खोज रहे हो ।

हूवर्ट० । हां ।

फ्लोरा० । तुम उसके निकालने के लिये बेफायदे कोशिश कर रहे हो, क्योंकि पिता जी ने उसको सैकड़ों बेर ढुँढवाया मगर कुछ पता न लगा तुम चुप क्यों हो गए ?

हूवर्ट० । कुछ नहीं, मैं सोचता था कि . ...

फ्लोरा० । नहीं तुम्हें मेरी कसम, सच कहो तुम उदास क्यों हो ? मुझसे नाराज तो नहीं हो गए ?

हूवर्ट०। (चौंक कर) ईश्वर न करे, भला मेरी मजाल है कि मैं तुमसे नाराज हो जाऊं ? तुम जो मुझसे कहती थी उसी पर विचार कर रहा था ।

फलोरा० । अहा ! अब मैं समझी । मैंने सोचा कि शायद सन्दूक के मिलने की उम्मीद टूट जाने से तुम्हें अफसोस हुआ, लेकिन सुनो तो, तुम्हारी उम्मीद के साथ तो मेरी उम्मीद भी बँधी है, फिर भला यदि यह सन्दूक भी हाथ से जाता रहे तब हम लोग क्या करेंगे ?

हूवर्ट०। प्यारी फ्लोरा ! निराश न हो तुम तो मेरा जी भी तोड़े देती हो। सच तो यह है कि मेरी सब आशा तुम्हीं

पर निर्भर है। मैं उस समय का हाल कैसे बता सकता हूं जब थोड़े दिन हुए मैं इस कसबे में आ कर रहने लगा और एक दिन तुम्हारी इस प्यारी सूरत पर अचानक नज़र पड़ जाने से मैं समझ गया कि खास इसी के पूजने के लिये संसार में मेरा जन्म हुआ है। मैं तब से दिन दिन भर तुम्हें देखा करता था। प्यारी फ्लोरा! तुम्हारे पग पग पर आंखें बिछाता था और यद्यपि तुम्हारे पास जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी तो भी दूर ही से तुम्हें देख कर अपने दिल को धीरज दे लिया करता था। तुम्हें याद होगा कि उस रोज जब तुम सैर कर रही थीं और मैदान में चरने वाले जानवरों ने तुम्हारे ऊपर हमला किया था तो मैं तुम्हें बचाने के लिये दौड़ आया था और तुम्हें हाथों पर उठा कर एक आराम की जगह पर ले गया था। उस वक्त तुम्हारा नाज़ुक सिर मेरे हाथ पर रक्खा हुआ था। उस समय मेरी खुशी का अन्दाजा कौन कर सकता था? कौन जानता था कि मैं इस तरह तुम्हारे पास बैठूंगा? उसके बाद अक्सर जब तुम से मुलाकात हुई और मैंने तुम्हारे चेहरे पर खुशी की झलक देखी धीरे धीरे तुम्हारे मुहब्बत का हाल मुझ पर खुलने लगा और यह मालूम हुआ कि ऐसी इज्जतदार लेडी मुझको प्यार की निगाह से देखती है।

फ्लोरा०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है, बल्कि यह क्यों नहीं कहते कि तुमने मुझे मुहब्बत करना सिखा दिया।

पहिले जव तुमने मेरी जान बचाई तो तुम्हारे एहसान ने मेरे दिल में घर किया, फिर तुम्हारी गरीवी पर मुझे वहुत अफसोस हुआ। यह मानो तुम्हारे प्रेम की पहिली सीढी थी, और फिर धीरे धीरे तुम्हारी इस प्यारी सूरत की याद अच्छी तरह मेरे दिल में जम गई। में नहीं कह सकती कि उस समय मुझको कितनी खुशी हुई जब मुझको मालूम हुआ कि तुम वहुत सीधे और भले हो हां तो वह बात तो रही गई पिता जी ने जो कुछ मुझसे कहा उससे यही मतलब निकलता है कि वह मेरी शादी कहीं कर देना चाहते हैं।

ह्यर्ट०। हा, यह बात है ?

फ्लोरा०। अफसोस ! क्या कहूं, उन्होंने तो कुछ इस तरह जोर देकर कहा ...

ह्यर्ट०। लेकिन अभी किसी खास आदमी को तो तुम्हारे लिए उन्होंने नहीं चुना ?

फ्लोरा०। यह तो मैं नहीं जानती, लेकिन आह ! एक बात मेरे दिल में खटकती है। उनकी बातचीत के ढङ्ग से मुझे कुछ सन्देह सा होता है, जिसे सोच कर मैं कांप उठती हूं।

ह्यर्ट०। किस बात का सन्देह ?

फ्लोरा०। मेरे पिता की बातों से मालूम पडता है कि उन्होंने ऐसे आदमी को चुना है जिससे यदि मैं तुमको चाहती न भी होती तो भी नफरत करती।

ह्यर्ट०। वह कौन है ?

फ्लोरा० । ट्रेसी ट्रिलवर्न ।

हूवर्ट० । क्या तुम उस महाजन के लडके का, जिक्र करती हो जो बहुत कन्जूस है ?

फ्लोरा० । यह तो मैंने तुम से पहिले ही कह दिया कि अभी सन्देह ही सन्देह है । हाँ, सुना मुझको अभी तुमसे बहुत कुछ कहना है, लेकिन नही . मैं तुमसे नहीं कह सकती, इस कारण कि वह भेद मेरे पिता से सम्बन्ध रखता है ।

हूवर्ट० । नही प्यारी फ्लोरा ! वह भेद मुझसे कभी न कहो जो खास तुम्हारे भरोसे पर छोड़ दिया गया हो, लेकिन मैं समझता हूँ कि तुम्हारे पिता सर कोर्टलेण्ड ने जो कर्जा बुड्ढे मिष्टर ट्रिलवर्न से लिया था, उस कर्जे से, वह तुम्हे ट्रेसी को सौंप कर अपना पीछा छुडाना चाहते हैं ।

फ्लोरा० । (ताज्जुब से) यह हाल तुम्हें कैसे मालूम हो गया ?

हूवर्ट० । कुछ नहीं, उड़ती हुई बात लोगों के मुह से मैंने भी सुन ली । तुम खूब समझ लो कि तुम्हारे पिता ट्रेसी के हाथ में हैं और निश्चय उसी के साथ वह तुम्हारा सम्बन्ध भी कराना चाहते हैं । आह ! फ्लोरा ! मैं किस मुह से कहू कि तुम्हारा हाथ कैसे नीच आदमी के हाथ में दे दिया जायगा । मेरी आंखें इस दु खदायी घटना को नहीं देख सकती हैं । यह बात नहीं हो सकती नहीं हो सकती । प्यारी फ्लोरा ! तुम भरोसा रक्खो कि तुम्हारे वास्ते मैं अपनी जान

फ्लोरा का चेहरा खुशी से दमकने लगा। उसको बहुत कुछ उम्मीद बंध गई। उसने बड़े प्यार से दोनों हाथ अपने प्यारे चाहनेवाले नौजवान हूबर्ट के गले में डाल दिये। हूबर्ट ने फ्लोरा के नर्म नर्म गुलाबी गालों को चूम लिया। हाय! यह पहिला चुम्बन था जिसको उसने अपना नक़द दिल दे कर लिया था।

फ्लोरा०। (अलग हो कर) लेकिन हमको नादानी से कोई काम न करना चाहिये। मान लो कि हम दोनों पिता जी के पावों पर गिर कर प्रार्थना करें कि वह हम दोनों को दुखी न करें तो किस उम्मीद पर? तुम उन की तबीयत का हाल जानते हो कि वह कभी मन्जूर न करेंगे।

हूबर्ट०। यदि तुम्हारे पिता ने तुम को लाचार किया तो तुम इसके सिवाय कर ही क्या सकती हो कि ड्रूसी ;टिलबर्न के साथ शादी कर लो।

फ्लोरा यह सुन कर कांप उठी। वह जिस तरफ देखती थी सिवाय नाउम्मीदी के कुछ न दिखाई देता था। उसका सिर चक्कर खाने लगा, पैर लड़खड़ा उठे और यह मालूम हुआ कि वह एक सायत में मूर्छित हो कर गिरा चाहती है! हूबर्ट ने उसको सम्हाला और बड़ी दर्दनाक आवाज़ में बोला, "प्यारी! इतनी नाउम्मीद न हो।" परन्तु फ्लोरा ने कुछ जवाब नहीं दिया। आँसू उसकी आंखों से बह रहे थे और हिचकियों का तार बंधा हुआ था। आखिर कुछ देर बाद

उसने अपने घबराये हुए जी को सम्हाला और अपनी टूटी फूटी और भर्राई हुई आवाज में कहने लगी :—

फ्लोरा०। हाय ! तुम कहते हो कि मैं इतनी नाउम्मीद न न हाऊ ! इससे ज्यादा और कौन दिल दुखाने वाला खयाल होगा (कांप कर) कि मैं तुम से जुदा हो कर दूसरे की स्त्री बनू । अरे निष्ठुर प्रेम ! तेरी कठोरता ने एक छिन भी चैन से न बैठने दिया । आह ! अब यह एक जान बाकी है, इसे भी ले ले । प्यारे हूवर्ट ! तुम दु खी न हो, जब तक दम में दम है मैं तुम्हारी हू यद्यपि मैं शपथ खाया है कि अपने बाप ने से कभी दगा न करू गी तौ भी उसी सच्ची मुहब्बत की कसम खाती हू जो हमारे और तुम्हारे दिल में मौजूद है कि मैं इस प्यारे हाथ के सिवाय जो इस वक्त मेरे हाथ में है, दूसरे की नहीं हो सकती । मैं अपनी जान दे दू गी लेकिन प्यारे हूवर्ट ! तुमको छोड दूसरे का मु ह न देखूंगी। क्यों अब तो तुम को सन्तोप हुआ ?

हूवर्ट०। हाय ! तुम उस दिल को सन्तोप दिलाती हो जो हमेश' के लिये तुम्हारा हो चुका है। क्या हुआ चाहे हमारी खाहिश पूरी न हो, पर हमारे दिल की असली मुहब्बत का जोश कम नहीं हो सकता। फिर भी मुझको यह जान कर बडी खुशी हुई कि तुम मेरी न होने पाओगी तो दूसरे की भी न होगी।

फ्लोरा ने हूवर्ट का हाथ पकड लिया और उसको मुह-

इज्ज़त भरी निगाहों से देखने लगी। खुशी की घड़ी बहुत जल्द बीत जाती है। फ्लोरा को मालूम हुआ कि दोपहर ढल गई है, इस लिये उसने हुबर्ट की तरफ एक अफसोस की निगाह डाली और कहा, "मुझे आये बहुत देर हो गई, अब मैं जाती हूं।"

हुबर्ट०। हाय! तो अब तुम जाओगी? अच्छा, तो फिर कब मिलेंगे?

फ्लोरा०। देखो, ईश्वर मालिक है। मैं मिलने की कोशिश करूंगी लेकिन अगर कोई मौका जल्द न मिला तो लाचारी है।

हुबर्ट०। लेकिन प्यारी फ्लोरा! तुम जानती हो कि मैं किस बेचैनी से तुम्हारा इन्तज़ार करता हूं? तुम्हारी इस वक्त की बातें अकेले में और ज्यादा तीर की तरह दिल में चुभेंगी, इस लिये तुम अपने चाहनेवाले को ज्यादे राह न दिखलाना और हां सुनो, एक बात मेरे ध्यान में आती है कि यदि तुमको मुझ से कुछ कहना हो तो एक पुर्जे पर लिख कर किसी लकड़ी के टुकड़े में बांध कर झील में

फ्लोरा०। अच्छा मैं समझ गई। जब मुझको तुमसे मिलने की जरूरत होगी तो मैं एक गुलदस्ता अपनी खिड़की में रख दिया करूंगी। बस तुम समझ जाना।

हुबर्ट०। (एक दूरबीन अपनी जेब से निकाल कर) इसके लिये यह खूब काम देगी। हां एक बात और भी है—कभी कभी एक आध फूल या और कोई निशानी झील में फेंक

दिया करना जिसे मैं उठा कर अपनी आखों से लगा लूंगा और समझूंगा कि मेरे दिल की मालिक मुझे भूली नहीं।

फ्लोरा ने मुस्कुरा कर "अच्छा" कह दिया। इसके बाद दोनों एक दूसरे से गले मिल कर अलग हुए। फ्लोरा एक तरफ को चली लेकिन हूवर्ट वहीं खड़ा रहा और उसकी धीमी चाल को प्यार और अफसोस की निगाह से देखा किया। जब वह एक चट्टान की आड में हो गई तो यह भी अपनी डोंगी में आया और जैसे ही चाहता था कि अपनी डोंगी को किनारे से अलग करे कि यकायक एक तरफ से आवाज आई, "अरे ओ मल्लाह! जरा अपनी राह रोके रह। देख खबरदार आगे न बढना, मैं आ पहुँचा। एक बहुत अमीर आदमी तेरी नाव पर चढ कर सामने वाले किले तक जायगा।"

यह आवाज उन गुंजान और अन्धेरी झाडियों की ओर से आई जिनका हाल हम पहिले कह चुके हैं और साथ ही जिस आदमी ने पुकारा था वह भी लम्बे लम्बे डग बढाता हुआ दिखाई पडा। उसके हाथ में एक चाबुक था और उसकी पोशाक बहुत बढिया थी। उसका कद लांबा था और सूरत के बारे में कहा जा सकता है कि अगर खूबसूरत नहीं तो कुछ ऐसा बदसूरत भी नहीं था, लेकिन उसके चेहरे से बेवकूफी और छोटी छोटी आंखों से बेईमानी झलकती थी। उम्र के बारे में कहा जा सकता है कि करीब बीस वर्ष के होंगी।

उसने पास पहुंच कर हूवर्ट से कहा, "वाह भाई वाह! तुम तो बड़े भाग्यवान् निकले (एक रुपया दिखा कर) लो मुट्ठी गरम करो। भला कौन जानता था कि रास्ते में मेरा मजबूत टट्टू लगड़ा हो जायगा। मैंने भी उसको एक किसान के हाथ घर भेज दिया। (हूवर्ट की तरफ गौर से देख कर) हां भाई मास्टर क्या नाम है तुम्हारा? उंह होगा कुछ। अच्छा तो तुम अपनी डोंगी पर मुझको बैठा कर जरा चाल तो दिखाओ। मगर अपनी नाव हटा कर वहां लगाओ, वहां किनारे से मिल जायगी और यहां किनारे से कुछ दूर है।"

हूवर्ट०। अच्छा साहब जब आप प्रार्थना करते हैं तो मैं ऐसा बेमुरौवत नहीं हूं कि आपका कहा न मानूं।

आदमी०। (खूब हंस कर) प्रार्थना? अबे मैं तुझ से प्रार्थना करता हूं? यह नहीं जानता कि तू बड़ा भाग्यवान् है जो मैं तेरी नाव पर सवार होना चाहता हूं। अच्छा जा, अब तुझे यह रुपया न दूंगा।

हूवर्ट०। (क्रोध में आकर) क्या तू इतना बड़ा इज्जतदार बन गया कि मैं तेरे सवार से भाग्यवान् हुआ?

आदमी०। (गुस्से से थरथराकर) अबे कमीने मल्लाह! तेरी शामत तो नहीं आई है?

हूवर्ट०। और तू कहां का भला आदमी है? एक बेईमान सूदखोर का लड़का होकर ऐसी बातें बनाता है!!

ट्रूसी टिलवर्न०। (क्योंकि यह वही था जिसका नाम

पाठकगण पहिले बयान में सुन चुके हैं) खबरदार, जो और कुछ कहा तो पानी में ढकेल दूंगा।

यह कह कर ट्रूसी आगे बढा और चाबुक का एक हाथ हूबर्ट पर जमा ही तो दिया। हूबर्ट भी नाव पर से कूद पडा और उसकी गर्दन पकड कर जमीन पर दे मारा और चार घूंसे जमा कर ट्रूसी को तिरछी नजर से देखता हुआ अपनी नाव पर चला गया।

ट्रूसी०। (जमीन से उठ कर और क्रोध से दांत कटकटा कर) अबे तेरी यह मजाल कि तू मुझको मारे? देख मेरे पास तलवार मौजूद है, अगर तू कोई भला आदमी होता तो मैं इसी वक्त अपनी तलवार से काम लेता, लेकिन मेरी तेरी क्या बराबरी? तू एक मल्लाह, गुलाम बल्कि उससे भी नीच है।

हूबर्ट०। बेवकूफ! बस ज्यादा मत बोल। भला तूने अपने दिल में समझा क्या है?

हूबर्ट यह कह कर अपनी डोंगी को किनारे से हटा कर गहरे पानी में ले चला।

ट्रूसी ट्रिलवर्न०। अहा! तू मुझसे लडेगा? खैर देखा जायगा।

हूबर्ट की डोंगी हवा से बातें करती हुई झील में चली जा रही थी। ट्रूसी ने यह देख कर कहा, "हा! अब इतनी दूर किले तक पैदल जाना पडा। एक तो मार खाई दूसरे यह एक और तकलीफ उठानी पड़ी! खैर, लाचारी है।" यह कहकर

उसने अपना मुंह पोंछा और उन्हीं गुंजान झाड़ियों को पार कर के फ्लोरा के पिता सरमाइलिज कोर्टलेण्ड के किले की ओर चल निकला।



तीसरा बयान

ट्रेसी टिलबर्न जब किले में दाखिल हुआ तो उसने झील की घटना की बात किसी से न कही। वह एक सुनसान कमरे में सर माइलिज कोर्टलेण्ड के साथ बैठा न मालूम क्या क्या बात करता रहा और इस बीच में फ्लोरा अपने कमरे में अकेली बैठी अपनी मुहब्बत के नतीजे पर गौर कर रही थी जो उसने हूबर्ट के साथ की थी। बैठे बैठे उसको खयाल आया, "ट्रेसी टिलबर्न इस समय पिता जी से न मालूम क्या क्या बातें कर रहा है। क्या केवल रुपये के मामले में बहस हो रही है? अभी तक तो मुझको कुछ शक ही शक था, मगर अब विश्वास होता जाता है कि जरूर कुछ दाल में काला है। हाय! तो क्या मैं अपने प्यारे हूबर्ट से बड़ी बेदर्दी के साथ जुदी कर दी जाऊंगी? (जोर से) नहीं, यह नहीं हो सकता। मेरे हूबर्ट! मेरे प्यारे हूबर्ट! मैं तुम्हारी हो चुकी। (चौंककर) अरे किसी ने सुन तो नहीं लिया?"

यह कह कर फ्लोरा ने घबराहट के साथ चारों ओर

देखा, लेकिन कुशल यह हुआ कि कोई वहां नहीं था। थोडी देर के बाद फ्लोरा को मालूम हुआ कि ट्रेसी टिलरने सर माइलिज से मुलाकात करके जा चुका है और जब वह खाने के कमरे में बुलाई गई तो उसे सन्देह था कि सर माइलिज के मुह से अब कुछ न कुछ नई बात जरूर सुनेगी, परन्तु सर माइलिज ने उस बारे में फ्लोरा से कुछ नहीं कहा, लेकिन उसके ढंग से पाया जाता था कि वह जरूर कोई बात अपने दिल में लिये हुए है जिसको उसने किसी अच्छे मौके पर कहने के लिये उठा रक्खा है। सुबह को जब वह सो कर उठी तो उसने अपने बाप के ढग से मालूम कर लिया कि आज वह कुछ कहना चाहता है। वह बेचैनी और जल्दी में मामूली तौर पर सिंगार करके अपने कमरे में जा कर उदासी से बेठ गई। जलपान करने के वास्ते जिस समय वह बेठी उसने अपने बाप को अपनी ओर ऐसी निगाह से देखते पाया जेसे वह कुछ पूछना चाहता हो। जलपान करने बाद सर माइलिज ने फ्लोरा से एक कमरे की तरफ इशारा कर के कहा, ' जरा तुम मेरे साथ आना तो। मुझे तुमसे कुछ कहना हूँ।"

यह सुन कर फ्लोरा का दिल धडकने लगा, लेकिन वह अपने बाप के पीछे पीछे चली गई। कमरे में पहुच कर सर माइलिज ने फ्लोरा को एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और आप भी एक कुर्सी खींच कर फ्लोरा के बिल्कुल सामने

बैठ गया ताकि चेहरे के उतार चढ़ाव से मालूम कर ले कि फ्लोरा पर उसकी बातों का क्या असर पड़ा। उसने फ्लोरा के चेहरे की तरफ खूब गौर से देख कर कहा :—

सर० मा०। प्यारी बेटी! जानती हो कि मैंने इस वक्त तुमको किस वास्ते तकलीफ दी है? आह! इस समय पिता अपनी प्यारी बेटी से प्रार्थना करता है कि वह उसको तबाही से बचा ले।

फ्लोरा को यह मालूम हुआ कि मानो उसका खून ठण्डा होकर रगों में जम गया है। उसने अपनी कुर्सी का सहारा लेकर बड़ी मुश्किल से कहा :—

फ्लोरा०। पिता जी! आपके कहने का मतलब क्या है?

सर० मा०। यद्यपि मैं जानता हूं कि इस समय मेरी बात सुन कर तुमको बहुत दुःख होगा लेकिन मैं इसके सिवाय कुछ नहीं कर सकता कि जहां तक बने उसको थोड़े में कहूं। अच्छा सुनो, मैं इस समय बिल्कुल अपने महाजन के हाथ में हूं, उसको अख्तियार है कि यह मकान जिसमें मैं इस समय बैठा हूं और यह जायदाद जिस पर इस वक्त मेरा अधिकार है ले ले और मुझ को इस मकान से निकाल दे।

सर माइलिज इस वक्त कोशिश कर रहा था कि किसी तरह आंसू निकल आवे, लेकिन यह न हो सका तौ भी उसने अपनी आवाज को बहुत ही उदास बना लिया ताकि उसकी भोली भाली बेटी का दिल पसीज जाय। उसने फिर कहना

आरम्भ किया,—"हां मेरी प्यारी फ्लोरा! तुम मुझे स
साफ बता दो कि क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारा बुड्ढा
बिल्कुल तबाह हो कर एक एक पैसे का मुहताज हो जाय
जगह जगह मारा फिरे तथा उसकी कोई बात भी न सुने ?
तुम यह चाहती हो कि अपने चाहनेवाले बाप को इस
से छुटकारा दिलवाओ ? मेरी प्यारी बेटी! तुम बता दो
इनमें से किस बात को ज्यादा पसन्द करती हो ?

फ्लोरा०। (अफसोस के साथ) पिता जी! मैं किस बात
को पसन्द करू ? आप साफ साफ कहिये तो मालूम भी हो।

सर माइलिज को यह सुन कर कुछ क्रोध आ गया लेकिन
उसने अपनी तबीयत को सम्हाला ताकि बना बनाया खेल कहीं
बिगड न जाय और जोर देते हुए गिडगिडाहट के साथ कहने
लगा ,—

सर० मा०। साफ साफ यह है कि क्या तुम इस बात
को मजूर करोगी कि तुम्हारा हाथ ट्रेसी टिलवर्न के हाथ में
दे दिया जाय ? ताकि तुम आराम से जिन्दगी बिताओ और
मुझ पर से भी इस कर्जे का बोझ हलका हो ?

फ्लोरा०। क्या ट्रेसी टिलवर्न ने खुद अपने मुंह से
अपनी इच्छा प्रगट की है।

सर०मा० (दिल में खुश हो कर) बेशक ! अरे तुम क्या
जानो कि वह किस दिल से तुम्हें चाहता है! उसने तो यह
कहा है कि मेरा दिल नहीं मानता है, नहीं तो मैं फ्लोरा के

साथ शादी करने के बारे में इतना जोर कभी न देता।

फ्लोरा० (उसी तरह धीमी आवाज में) मैं ट्रेसी टिलवर्न के साथ ब्याह करना मजूर करूं ! यह बात ऐसी है जो मेरी सब आशाओं को मिट्टी में मिला देगी और सम्भव था कि आप के सिवाय दूसरे के मुंह से यह बात सुन कर मैं चुप न रह जाती। हां, यह सम्भव है कि मैं आपकी हुक्म मानने वाली बेटी होने के कारण आप की बात मान लूं और चाहे वैसा ही दुःख मुझ पर पड़े, सह लूं। अच्छा तो आप बिना कुछ सोचे उन सब बातों को मेरे सामने बयान कर दीजिये जो ट्रेसी टिलवर्न ने आप से कही हैं।

सर०मा०। मेरी प्यारी बेटी ! मैं सब हाल तुमसे बयान किये देता हू। मैंने सब हिसाब किताब जांच लिया है। (एक कागज जेब से निकाल कर) यह देखो, हम को सब मिला-कर नौ हजार सात सौ पचहत्तर पौण्ड देना है।

फ्लोरा०। हा यह तो मैं समझी, लेकिन उसने कहा क्या, मैं साफ साफ सुनना चाहती हू।

सर माइल्जि मन में आगा पीछा करने लगा और उसको बार बार खयाल आता था कि देखें इस बातचीत का नतीजा क्या होता है पर फिर भी वह अपनी बेटी से गिड़गिड़ा कर कहने लगा, "अब जो कुछ मुझको कहना है वह केवल इतना ही है कि ट्रेसी टिलवर्न ने सिर्फ तीन दिन की मुहलत दी है।

इसके बाद उसे अख्तियार होगा कि तुम्हारे बूढ़े बाप को इस मकान से निकाल दे।"

फ्लोरा०। (चौंक कर) इतनी जल्दी।

सर०मा०। हां अफसोस! अब सिर्फ इतनी ही मुहलत है। इसके बाद हम दोनों के लिये सिवाय खरावी के और कुछ भी नहीं है।

फ्लोरा० लेकिन क्या ट्रेसी डिलवर्न सचमुच हम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करेगा?

सर०मा०। बेशक, वह अवश्य ही ऐसा करेगा।

फ्लोरा०। पर फिर भी आप को मेरी किस्मत का ठिकाना ऐसे आदमी के साथ लगा देना मंजूर है?

सर० मा०। (चौकन्ना हो कर) लेकिन तुम्हीं सोचो इसके सिवाय वह कर ही क्या सकता है। जब उसकी सब उम्मीदें एक दम तोड़ दी जाय, उसकी सब आशायें एक बार ही धूल में मिल जाय तो क्या यह सम्भव नहीं है कि उसकी मुहब्बत नफरत के साथ बदल जाय अर्थात् वह तुमको प्यार करने के बदले तुमसे नफरत करने लगे? बल्कि बदला लेने की भी उसकी इच्छा हो? यह तो मामूली बात है कि आदमी तब तक मतलबी नहीं हो जाता जब तक उम्मीद उसके दिल को कुछ भी सहारा दिये रहती है, लेकिन इसमें तुम्हारे घबराने की कोई बात नहीं है। वह तुम्हारे साथ हमेशा मुहब्बत का बर्ताव करेगा और उसी तरह प्यार करेगा जैसे एक

मझदार पति अपनी पत्नी को चाहता होगा।

फ्लोरा०। (आखों में आंसू भर कर) बस बस, अब आप धिक न कहिये, मैं समझ गई कि मैं "जुल्म" के पंजे में दे जाऊंगी।

सर० मा०। क्या? "जुल्म" कैसा? तुम इसको जुल्म मझती हो कि लड़की अपने बाप को बेइज्जती और उन मुसीबतों से बचा ले जिनसे मरना अच्छा है?

फ्लोरा०। अच्छा, जो कुछ हो, आपकी बात को मानना रा धर्म है।

सर०मा०। तुम्हीं सोचो। तो क्या तुम मेरी बात मानती ?

फ्लोरा०। हां, लेकिन कब?

सर०मा०। यही तीन दिन में।

फ्लोरा०। लेकिन इतना समय तो बहुत कम है।

सर० मा०। परन्तु मैं तुम से कह चुका हूं कि मोहलत इतनी ही है, इसके बाद हम कुछ भी नहीं कर सकते। तो ज बुधवार है, बस शनिवार को आठ बजे रात्रि के समय म्हारा विवाह हो जाय।

फ्लोरा०। अच्छा, मान लीजिये कि यह सब अगर हो जाय तो नतीजा क्या होगा?

सर० मा०। नतीजा यह होगा कि ट्रेसी डिलवर्न, कर्जे के बन्ध में जितने कागज पत्र मेरे हाथ के लिखे उसके पास

मौजूद हैं, उन सबको मेरे हवाले कर देगा और मैं सब आफतों से बच जाऊँगा तथा ईश्वर को धन्यवाद दूंगा कि बुढ़ापे में मेरी इज्जत बच गई।

फ्लोरा की सूरत इस समय बहुत उदास थी। वह बार बार चाहती थी कि कुछ जवाब दे, परन्तु उसके थरथराते हुए होंठ उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलने देते थे।

वह सोचती थी कि चाहे जान ही क्यों न चली जाय, लेकिन बाप को धोखा देना और उसका हुक्म न मानना बड़ा पाप है क्योंकि—"पिता धर्म्मः पिता स्वर्ग. पिताहि परमन्तप, पितरि प्रीति मापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता.॥" यद्यपि ह्यूबर्ट का प्रेम उसके दिल को उभार रहा था तो भी उसने अपने को बहुत सम्हाल कर कहा, "अच्छा मैं राजी हूं। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही कीजिये।"

सर माइलिज खुशी में आ कर सब दु:ख भूल गया और उसका चेहरा खुशी से दमकने लगा परन्तु फ्लोरा सुस्त होगई।

सर० मा०। प्यारी बेटी! मैं किस मुंह से तुम्हें धन्यवाद दूं कि तुमने मुझपर तरस खा कर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। विश्वास मानो कि ट्रेसी टिलबर्न बहुत ही लायक आदमी है। हां तो तुम उससे मुलाकात करोगी? मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उसको प्यार करोगी और खुश भी होगी।

फ्लोरा०। हाय, खुश होऊँगी? लेकिन खैर, वह कब आवेगा?

सर० मा० । बस अब आया ही चाहता है । वह मुझसे इसी वक्त मिलने का वादा कर गया है। (खिड़की की तरफ देख कर) देखना तो सही वह तो नहीं आ रहा है।

उस वक्त ट्रेसी ट्रिलवर्न जल्दी २ पांव उठाता हुआ किले के सामने वाली सड़क पर से चला आता था। उसको जल्दी थी कि किसी तरह अपनी शादी के बारे में जो बात ठीक हुई हो उसको सुन ले।

सर० मा०। (फ्लोरा का हाथ अपने हाथ में ले कर मैं जा कर उसको तुम्हारे पास भेजे देता हू। देखो बहुत ही खुशी और प्यार से बातचीत करना।

यह कह कर सर माइलिज कमरे के बाहर चला गया। उसके जाते ही फ्लोरा कुर्सी का सहारा कर के बैठ गई। उस समय उसकी आंखों में आंसुओं की एक बूंद भी नहीं थी और न उसके [illegible] बिल्कुल मुर्दनी सी छा [illegible] टकटकी

चाप अपनी कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई और डिलवर्न अजब तरह से अठलाता और मूछों पर हाथ फेरता हुआ फ्लोरा के पास आ कर कहने लगा, "प्रिये! तुम्हारे प्रतिष्ठित पिता ने इस समय जो समाचार मुझ को सुनाये, बस जी ही जानता है कि उनसे मुझको कैसी खुशी हुई। अहा! मैं कैसा भाग्य वान हूं। (मन में) अहा! यह भी बहुत अच्छा हुआ कि मैं आज खूब बढ़िया कपड़े पहिन कर आया हूं। ऐसे कपड़े बड़े बड़े शौकीनों के पास भी नहीं निकलते, लेकिन हाय! न हुई वह लाल जैकेट, नहीं तो फ्लोरा मुझे देखते ही मोहित हो जाती।"

फ्लोरा०। (उसकी बातों से घबरा कर) मास्टर डिलवर्न! अब तो अवश्य ही आपको मुझसे मिलने का हक हो गया।

डिलवर्न०। मेरी प्यारी! मैं अपनी मुहब्बत तुम्हारे दिल में पैदा करने के लिये कोई बात बाकी न रक्खूंगा और सोचो तो कि तुम्हारा प्यारा पति किसी से किस बात में कम है? यदि धन की ओर देखो, तो बड़े बड़े रईस इस समय मेरी बराबरी नहीं कर सकते, यदि अपना प्रेमी चाहो, तो मुझसा चाहने वाला दुनिया में कहीं न मिलेगा और चतुराई तो मानो मुझमें कूट कूट कर भरी है। लोगों को धोखा दे देना मेरे बायें हाथ का खेल है। यदि खान्दानी बड़ाई चाहो, तो देखो मेरे पिता कितने बड़े साहूकार थे कि तुम्हारे पिता तक उनके देनदार हैं। प्यारी! तुम यह न समझना कि मैं ताने से कहता हूं, जब हम तुम एक हो गए तो मेरा जो कुछ है सब तुम्हारा

ही है-यदि अक्ल और लियाकत की तरफ देखो तो ईश्वर की कृपा से वह भी मुझमें मौजूद है। मतलब यह कि मुझ में सब ही बातें हैं, मैं कहां तक अपने ही मुह से अपनी तारीफ करूँ, तुम तो आप ही समझदार हो। (ठहर कर) हैं! तुम्हारा चेहरा पीला क्यों पड़ गया ?

फ्लोरा०। महाशय ! मेरे पिता से और मुझसे अब तक जो बातचीत हुई है वह तो शायद आपको मालूम ही होगी ?

टिलवर्न०। मैं समझ गया, रुपये वाली बात न ? तुम भरोसा रक्खो प्यारी, मैं तुम्हें इसलिये बुरा भला न सुनाऊँगा कि मैंने तुमको बिना जहेज के पाया।

फ्लोरा०। (बहुत ही बेचैन होकर) बुरा भला ?

टिलवर्न०। कहता तो हूं कि कुछ न कहूगा।

इतने में टिलवर्न दीवार में जो आईना लगा था उसमें अपना मुँह देख कर और तन गया ताकि ज्यादा खूबसूरत मालूम हो, फिर फ्लोरा की तरफ देख कर बोला, "प्रिये ! वह दिन कब आवेगा कि मैं तुम्हें खूब बनाव सिंगार किये देख कर खुश होऊँगा ?"

फ्लोरा०। (उसकी बात को अनसुनी कर के) मैं समझती हूं कि आप मुझसे इस समय शायद इसी वास्ते मिलने आये हैं कि मैं आपके सामने उस बात का प्रतिज्ञा करूं जिसके बारे में मेरे पिता आपसे कह चुके हैं।

टिलवर्न०। हाय ! तुम्हारे मुह से ऐसी बात

फ्लोरा० (ज़ोर दे कर) आप पहिले मेरी बात सुन लीजिये, फिर और बातें कीजियेगा। मैं आपसे साफ साफ कहती हूं कि मैं अपने बाप के हुक्म को कभी न टालूंगी। आप अगर मुझसे शादी करना चाहते हैं तो मैं राजी हूं।

डिलवर्न०। तो क्या प्यारी तुम अपने नाज़ुक हाथ को ज़रा चूमने दोगी? या अगर तुम्हारे पतले होठों का बोसा लूं तो नाराज़ तो न होओगी?

फ्लोरा को बहुत ज्यादा गुस्सा चढ़ आया। उसके गाल तमतमा उठे और उसने बड़ी नफरत से कहा—"अच्छा अब मैं जाती हूं। खूब याद रखिये कि इन तीन दिनों तक मैं अपनी मालिक हूं, आपका मुझ पर कुछ भी अख़्तियार नहीं है। आप मेरे नाखून तक को नहीं छू सकते। अच्छा अब मैं नहीं ठहर सकती।"

यह कह कर फ्लोरा कमरे के बाहर चली। डिलवर्न ता ज्जुब से आंख फोड़ फाड़ कर देखने लगा। जब फ्लोरा उसकी आंखों के सामने से दूर हो गई तो बैठ कर सोचने लगा "वाह! न प्यार की बातें न कुछ! हाथ भी न लगाओ, यह न करो। हाय! इस समय मैं अपनी लाल रंग की जैकेट न पहन आया, नहीं तो वह देखते ही मोहित हो जाती। खैर, क्या बड़ी बात है, तीन दिन की और कसर है इसके बाद वह मेरी ही होगी। फिर कैसा इन्कार? फिर तो चैन ही चैन है! लेकिन वाह, मैं भी कैसा बेवकूफ हूं। यह न समझा कि औरतें पहिले यों ही

शर्माया करती हैं। बस कल मैं वह लाल जैकट जरूर पहिन कर आऊंगा, फिर तो वह मेरी खूबसूरती देख कर मुझको मनावेगी और मैं रूठ रूठ जाऊंगा!!"

यह सोच कर दिलवर्न खूब हँसा। फ़्लोरा उस कमरे से उठ कर सीधी अपने खास कमरे में जा कर बैठ गई लेकिन यकायक एक ख्याल ने आ कर उसे चौंका दिया, और उसने उठ कर एक बड़ा गुलदस्ता उस खिड़की में रख दिया जो झील की तरफ पड़ती थी।

चौथा बयान

सुबह के आठ बज चुके हैं और नौ बजा चाहते हैं। दो मुसाफिर अपने घोड़ों पर सवार उस तङ्ग और ऊबड़ खाबड़ सड़क पर जा रहे हैं जो मछली वालों के गांव की तरफ गई है। इस जगह पर बिल्कुल घना जंगल है और पेड़ ऐसे गुञ्जान हैं कि निगाह दूर तक नहीं जा सकती। यहां अगर कुछ चहल पहल है तो बस उन्हीं जंगली पक्षियों की जो कहीं कहीं बैठ कर एक आध तान उड़ा दिया करते हैं या उन गाय भैंस वगैरह जानवरों की जो प्रायः खुले मैदानों में चरते हुए दिखलाई दे जाते हैं। मतलब यह कि यहां कोई ऐसी दिलचस्पी की बात नहीं है जिसको सुन कर पाठकगण खुश हो सकें।

जिन मुसाफिरों की बात हमने कही है, उनमें से एक का घोडा दूसरे से कुछ आगे था जिससे जान पडता है कि अगला आदमी मालिक था और पिछला शायद उसका नौकर, क्योंकि वह बडे अदब से धीरे धीरे अपने घोड़े पर चला आता था। आगे वाले मुसाफिर की उम्र कोई चालीस वर्ष की होगी। यद्यपि उसके बाल कुछ कुछ सुफेद हो चले थे लेकिन उसकी मूछें बिल्कुल काली थीं। वह एक बढिया सफरी पोशाक पहिने हुए था। उसकी कमर से एक तलवार लटक रही थी और कोठी के दोनों तरफ दो पिस्तौल रक्खे हुए था। उसका साथी भी हथियारबन्द था, मगर उसके पास सिर्फ एक तलवार ही थी। ये दोनों मुसाफिर डाक के घोडे पर सवार थे जिससे जान पडता था कि ये बहुत दूर से चले आते हैं।

कुछ देर तक दोनों मुसाफिर चुपचाप अपना रास्ता तै करते रहे। थोडी देर बाद जब वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां से सडक दो तरफ को मुडी थी तो कुछ ठहर गये और सोचने लगे कि किस सडक से चलें। कुछ सोच कर अगले मुसाफिर ने पिछले से कहा "विलमट! जरा आगे आओ, तुम्हारी क्या राय है? किस रास्ते से चलना चाहिए? तुम तो यहां के जमीन्दार से रास्ता अच्छी तरह पूछ चुके हो"

विलमट०। (हाथ से इशारा कर के) महाशय! यह सडक जो दाहिनी ओर गई है, वह तो सीधी जंगल में होती हुई

मछली वालों के कसबे को चली गई है, और यह दूसरी जो चाईं तरफ को है, यह चक्कर खाती हुई झील के पश्चिमी किनारे पर निकली है—उस तरफ जिधर ब्लण्डफोर्ड का किला है।

फौजी अफसर०। (क्योंकि यह सचमुच फौजी आदमी था) हां, तो यही सडक मछलीवालों के कसबे को गई है? तो आओ इसी तरफ तो जाना ही है।

यह कह कर दोनों आगे बढे। थोडी दूर जा कर उनको इससे ज्यादा घना जंगल मिला। एक ओर तो ऊचे ऊचे पेडों ने झुक कर सडक को छा लिया था, दूसरी ओर पहाडियों का ऊंचा नीचा सिलसिला दूर तक चला गया था। ये लोग कुछ ही आगे बढे होंगे कि किसी तरफ से जोर से सीटी बजाने की आवाज आई और सडक के एक तरफ से सूखे पत्तों की खडखडाहट के साथ ही दो आदमी जिनकी सूरत से मालूम होता था कि डाकू है, निकल कर इन मुसाफिरों पर झपट पडे। दूसरी तरफ से भी दो और डाकू निकले और इन चारो आदमियों ने हमारे मुसाफिरों पर हमला किया, परन्तु फौजी अफसर बडा होशियार आदमी था, जैसे ही उसने सीटी की आवाज सुनी उसका हाथ पिस्तोल पर पडा। अब दो डाकू तो फौजी अफसर की ओर बढे और दो विल्मट से मुकाबला करने लगे। विल्मट अपनी तलवार खींच ही रहा था कि एक आदमी ने पीछे से झपट कर एक हाथ जमा ही

तो दिया और यह बेचारा बेहोश हो कर अपने घोड़े पर से गिर पड़ा। इसके बाद चारो डाकू मिल कर अफ़सर पर हमला करने लगे, लेकिन वह पहिले ही अपने दोनों पिस्तौलों के घोड़े चढ़ा चुका था और जैसे ही डाकू उसके पास पहुंचे उसने फायर किया, परन्तु गोली एक डाकू के कान के पा से हो कर उसकी टोपी में लगती हुई निकल गई यह देख कर हमारे अफ़सर ने फिर फायर किया, लेकिन यह निशाना भी खाली गया, आखिर उसने लाचार हो खाली पिस्तौल खींच कर इस जोर से एक डाकू को मारी कि वह थोड़ी देर के लिए बेहोश हो गया। अब ये तीनों बचे हुए डाकू उसके पास आ गये और उसने तलवार निकाल कर बड़ी बहादुरी से वार करना शुरू किये, लेकिन डाकू भी बड़े लड़ने वाले थे। कुशल यह था कि उनके पास बन्दूक या उस तरह का कोई हथियार नहीं था, नहीं तो वे अब तक अफ़सर का काम तमाम कर चुके होते।

एक डाकू ने बढ़ कर घोड़े के मुह पर एक डण्डा मारा और घोड़े ने भड़क कर अफसर को जमीन पर गिरा दिया। यह बड़ा बारीक समय था, डाकू बराबर वार कर रहे थे और अफसर अब पैदल था। यद्यपि वह बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था फिर भी अकेला किस किस को जवाब देता, तौ भी वह अपने भरसक उनके वारों को बराबर रोक रहा था! यकायक उन डाकुओं में से एक ने मौका पा अफ़सर के पीछे

पहुँच कर अपनी तलवार ऊंची की और वार किया ही चाहता था कि जगल में एक तरफ बन्दूक दगने की आवाज आई। गोली उस डाकू की छाती पर पडी और एक भयानक चीख के साथ ही वह जमीन पर गिर कर ठण्डा हो गया। जिस आदमी ने बन्दूक फायर की थी वह बहुत जल्दी जगल में से निकल कर अफसर के सामने पहुँच गया और झपट कर एक और डाकू पर ऐसा हाथ मारा कि वह भी वहीं ठण्डा हो गया! इसी समय जो अफसर के खाली तमचे से चुटैल हो कर बेहोश हो गया था होशियार हो कर लडने लगा लेकिन शायद एक मिनट बीता होगा कि दोनों डाकू भाग खडे हुए। हमारा बहादुर आदमी जिसने अफसर की जान बचाई थी, उनके पीछे दौडा, परन्तु अफसर ने पुकार कर कहा, "मेरी जान बचाने वाले! अब तुम तकलीफ न उठाओ। उन कुत्तों के पीछे परेशान होने से क्या फायदा? आओ आओ लौट आओ, मैं तुम्हें धन्यवाद तो दू।"

वह आदमी अफसर की इस बात को सुन कर रुक गया। अफसर ने जब उसकी तरफ ध्यान दे कर देखा तो उसको मालूम हुआ कि उसकी जान बचाने वाला एक खूबसूरत और नौजवान आदमी है।

आदमी०। (बडी नम्रता से) मैं भला किस लायक हूँ कि आप मुझको धन्यवाद देंगे? मैंने कोई बडा काम तो किया

यह सुन कर हूबर्ट ने जेब से एक दूरबीन निकाल कर सर रिचर्ड को दी और कहा, "इससे आप किले की इमारत अच्छी तरह देख सकते हैं।"

सर रि०। (दूरबीन लगा कर) हां यह तो बहुत अच्छी चीज है, अब किले की इमारत साफ साफ दिखाई देती है। वह देखो उसकी खिड़कियां भी खुली हुई हैं और यह कौन खड़ा है ? यह तो कोई औरत है। लेकिन खूबसूरत है! और यह उसके हाथ में क्या चीज है! इसमें तो बहुत से फूल बंधे हुए हैं, शायद कोई गुलदस्ता है। लो! उसने उस गुलदस्ते को खिड़की में रख दिया!

हूबर्ट०। क्या ' गुलदस्ता !!

यह कह कर उसने सर रिचर्ड के हाथ से जल्दी में दूरबीन छीन ली और अपने ध्यान में डूबे रहने के कारण सोचा भी नहीं मैं कैसी असभ्यता से दूरबीन ले रहा हूँ। फिर वह दूरबीन लगा कर सररिचर्ड से कहने लगा, "हां ठीक है। उस सामने वाली खिड़की में गुलदस्ता रक्खा हुआ है।'

अब ये दोनों झील की ओर से लौटे और हूबर्ट ने अपने मन में कहा,—"छि ! मैंने किस घबराहट में दूरबीन छीन ली !"

हूबर्ट के मकान पर पहुँच कर सर रिचर्ड ... हुए और कहा, ' मेरे माननीय ...

किले की रानी



"उसने उस गुलदस्ते को खिड़की में रख दिया।"

(पेज ५४)

सान न भूलूँगा जो आज तुमने मेरे साथ किया है। अच्छा बन्दगी।"

यह कह कर वे चले गए और विल्मट ने भी उनका साथ दिया। इसके बाद ह्यूबर्ट अपनी डोंगी पर सवार हो कर एक ओर को रवाना हुआ। पाठकगण! जिस गुलदस्ते को फ्लोरा की खिड़की में सर रिचर्ड और ह्यूबर्ट ने देखा, वह वही गुलदस्ता था जिसका हाल आपको पिछले बयान के अन्त में मालूम हो चुका है।



पांचवां बयान

"जब मुझको तुमसे मिलने की जरूरत होगी तो मैं एक गुलदस्ता अपनी खिड़की में रख दिया करूंगी बस तुम समझ जाना।"

यह बात जो फ्लोरा ने विदा होते समय ह्यूबर्ट से कही थी, उसके दिल पर जम गई थी। वह बड़ी बेचैनी से उस इशारे की बाट जोहता था जिसकी उसको उम्मीद दिलाई गई थी और यही वजह थी कि सर रिचर्ड के मुंह से गुलदस्ते का नाम सुन कर उसने जल्दी से दूरबीन उनके हाथ से छीन ली थी।

जिस समय वह डोंगी पर सवार था, उसका दिल आशा और निराशा के समुद्र में गोते खा रहा था यद्यपि वह जानता

सूरत देखते ही सब भूल गई। हाय! अब तो केवल इतना याद है कि प्यारे! बिदा (सिसक कर) हमेश के लिये विदा!!

हूबर्ट ने फ्लोरा को अपनी छाती से लगा लिया और दोनों इतना रोये कि हिचकी बन्ध गई।

हूवर्ट०। हा प्रिये! मैं तुम्हारी क्या मदद करू? क्या मैं नम्रता से तुम्हारे पिता से प्रार्थना करू? क्या वह हम दोनों पर दया करेंगे? या प्यारी फ्लोरा! मैं तुमसे यह कहू कि तुम मेरे साथ कहीं चली चलो? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करू!!

फ्लोरा०। (आंसू पोंछ कर) नहीं प्यारे! यह नहीं हो सकता, इसमें मेरे पिता की अप्रतिष्ठा होगी और मै अपने बूढे बाप की बेइज्जती नहीं चाहती।

हूवर्ट०। हाय! तो क्या अब कोई उपाय नहीं है?

फ्लोरा०। कोई नहीं।

यह ऐसी बात थी जिसने हूवर्ट और फ्लोरा दोनों का दिल तोड दिया।

फ्लोरा०। हां, मुझे और क्या कहना है? तुम्हें अच्छी तरह देख लू, शायद यह आखिरी मुलाकात हो। यह प्यारा हाथ (चूम कर) यह प्यारा हाथ शायद आखिरी दफे मेरे हाथ है। ऐ मेरे चाहने वाले? मेरे चाहने वाले! मेरे प्यारे! मुझे गले से लगाओ, मैं और कुछ नहीं चाहती। एक निगाह,

• एक मुहब्बत की निगाह   इधर देखो, हां. बस, अब मुझको जाना चाहिये।

हुबर्ट०। (बेचैन हो कर) क्या ज़ुल्म के पंजे में फँसने के लिये ?

फ़्लोरा०। नहीं, बल्कि अपनी जान देने के लिये, अपने बाप की इज़्ज़त बचाने के लिए। अच्छा मेरे सच्चे चाहने वाले ! मैं विदा होती हूं—जाती हूं।

हुबर्ट०। विदा . ..

कहते ही कहते हुबर्ट मूर्छित हो कर गिर पड़ा, लेकिन फ़्लोरा पहिले ही बिजली की तरह चमक कर गायब हो चुकी थी। उसको मालूम भी न हुआ कि प्यारे हुबर्ट पर क्या हुआ। पर वह इतनी जल्दी क्यों चली आई ? वह इस लिये चली आई कि अपने प्यारे के पास देर तक खड़े रहने से उसकी इच्छा कहीं बदल न जाय और उसको अपनी बाप की आज्ञा का उल्लङ्घन न करना पड़े। वि०१

जब फ्लोरा बहुत दूर निकल आई तो रुकी और एक चट्टान के टुकड़े पर बैठ कर आप ही आप कहने लगी, "विदा होती हूँ   यह क्यों ? क्या अब कभी न मिलेंगे ? बेशक, अब कभी न मिलेंगे।"

इससे ज्यादा वह कुछ न कह सकी और फूट फूट कर रोने लगी। हम नहीं कह सकते कि उस वक्त उसके दिल का क्या हाल था। बहुत देर के बाद रुके श्वास छिपाते हुए

और जब वह अपने किले में दाखिल हुई तो उसने एक अपरिचित आदमी को अपने बाप के साथ बाग में टहलते देखा। वह उस समय कदापि अपने बाप के सामने न जाती क्योंकि रंज और अफसोस के कारण उसका चेहरा उतरा हुआ था, लेकिन सर माइलिज ने यकायक उसको देख लिया और पुकार कर कहा, "फ्लोरा! यहां आओ।" फ्लोरा जब पास पहुंची तो अजनबी आदमी ने जो वास्तव में सररिचर्ड थे सिर पर से टोपी उतार कर सलाम किया। फ्लोरा भी सलाम का जवाब दे कर बडे अदब से उनके पास खड़ी होगई।

सर मा०। देखो फ्लोरा यह मेरे बडे पुराने दोस्त हैं।

फ्लोरा०। मैं बहुत प्रसन्न हूं कि आप हमलोगों पर कृपा कर यहां आये।

सर रिचर्ड०। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हू कि उसने सरमाइलिज को तुम सी भली और सुन्दरी बेटी दी। तुमको तो काहे को मालूम होगा कि मैं और यह (सरमाइलिज) कैसे कैसे अवसरों पर एक साथ रहे हैं। तुम उस वक्त पैदा भी नहीं हुई थीं।

सर मा०। फ्लोरा! देखो यह भी बडी खुशी की बात है कि यह बहुत मुद्दत के बाद आज यहा आ गए हैं। अच्छा तो तुम जा के इनके वास्ते एक कमरा सजा दो और टेबुल पर भोजन भी चुनवा दो, लेकिन चार आदमियों के लिए खाने

था इन्तजाम करना पड़ेगा क्योंकि ट्रेसी भी आज आने का वादा कर गया है।

ट्रेसी का नाम सुनते ही फ्लोरा का चेहरा पीला पड़ गया। सर रिचर्ड ने तुरन्त उसका भाव समझ लिया।

सर मा०। लेकिन फ्लोरा! इस वक्त तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ हुआ है?

फ्लोरा०। (घबराहट के साथ इधर उधर देख कर) जी कुछ नहीं, यही धूप से जो चली आती हूं।

सर मा०। अच्छा जाओ। (फ्लोरा के जाने के बाद सररिचर्ड से तुम मेरी लड़की को देख कर खुश तो जरूर हुए होगे। देखो वह जितनी खूबसूरत है उससे ज्यादा हुक्म मानने वाली है और अब उसकी शादी भी होने वाली है।

सर रि०। क्या ट्रेसी के साथ?

सर मा०। हां लेकिन आपको कैसे मालूम हुआ?

सर रि०। (कुछ सोच कर) क्या! मुझे कैसे मालूम हुआ! क्यों, मालूम क्यों न होता। ट्रेसी का नाम तुम्हारे मुंह पर आते ही मैं देख चुका था कि फ्लोरा के चेहरे पर खुशी झलकने लगी थी।

थोड़ी देर में ट्रेसी भी पहुंच गया। उसने घोड़े से उतर कर सलाम किया और पास पहुंच कर कहने लगा "क्यों हर-हाइलिज! यह आप के साथ कौन है?"

सर मा०। यह हमारे बहुत पुराने मित्र हैं॥

ट्रेसी०। हां मैं समझा! यह भी कोई फौजी आदमी है। यद्यपि फौजी लोग उजड्ड होते हैं तथापि मैं आप से मिल कर बहुत खुश हुआ। उहँ! आप के कपडे इतने मैले क्यों हो रहे हैं? शायद अपने बहुत दूर का सफर तै किया है?

सर मा०। (ट्रेसी की बेहूदी बातों को काटने की इच्छा से) हां, यह अभी बहुत दूर से चले आ रहे हैं। तुमतो इन को नहीं जानते होगे। यह बादशाही दरबार के एक प्रतिष्ठित उहदेदार हैं॥

ट्रेसी०। हमारे चार्ल्स के दरबार के? लेकिन इनकी पोशाक का यह हाल! (हंस कर) आप बडे सीधे-सादे आदमी जान पडते हैं। (सररिचर्ड से) यद्यपि शाही दरबार से मुझसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, तो भी मैं अपने कपड़ों का बहुत खयाल रखता हूँ। देखिये न, यह मेरी लाल जैकेट कैसी अच्छी है। मैं समझता हूं आपने इसको जरूर पसन्द किया होगा॥

सर रि०। (लापर्वाही से) जी हां, अच्छी क्यों नहीं है॥

सर मा०। अब आप लोग अन्दर चलें तो ठीक है॥

ट्रेसी०। अच्छा आप जाइये, मैं तो अभी जरा बगीचे की सैर करूंगा॥

सर मा०। अच्छी बात है॥

सर माइलिज् अपने मित्र का हाथ पकडे हुए बाग में टहलते हुए मकान की तरफ चले।

सर मा० । मैं नहीं समझ सकता कि तुमने मेरे होने वाले दामाद के विषय में क्या सोचा, लेकिन यह बात अवश्य है कि तुम धीरे धीरे उसका स्वभाव जान लोगे ॥

सर रि० । हां, क्यों नहीं ॥

सर मा० । लेकिन तुमने इतना तो अवश्य देखा होगा कि वह कितना खूबसूरत है ॥

सर रि० । बहुत ।

सर मा० । और धनवान् भी है । इसके सिवाय बहुत ही सीधा सादा और भोला है, लेकिन इतनी बात है कि जरा रुपये के मामले में कड़ा है ॥

सर रि० । खैर यह तो कायदे की बात है (कुछ सोच कर) हां यह तो तुमने बताया ही नहीं कि यह शादी होगी कब तक ?

सर मा० । हां ठीक कहा, भाई फ्लोरा बहुत भली लड़की है । वह तो इतनी सीधी है कि उसने साफ साफ कह दिया कि शादी में कुछ धूमधाम न की जाय, नहीं तो जानते ही हो कि ट्रेसी को-रुपये की कुछ कमी है ही नहीं लेकिन वह भी फ्लोरा के कहने से राजी हो गया कि केवल विवाह हो जाना चाहिये, बस और कुछ जरूरत नहीं ।

सर रि० । तो क्या इस विवाह में और लोग शामिल न होंगे ?

सर मा० । नहीं नहीं यह नहीं होगा कि मेरे पुराने दोस्त

भी शामिल न हों, मगर वहुत धूमधाम न होगी। पर तुमको तो जरूर ही दो चार दिन ठहरना पड़ेगा ॥

सर रि०। तो क्या यह शादी बहुत जल्द होने वाली है?

सर मा०। हां बस इसी शनिवार की रात को ॥

सर रि०। ओह इतनी जल्दी! आज क्या है? बुधवार?

सर मा०। हां बस तीन दिन और बाकी हैं। क्या तुम अपने पुराने मित्र की प्रार्थना स्वीकार न करोगे? देखो यदि सम्भव हो तो जरूर ठहर जाओ।

सर रि०। अच्छा, मैं ठहर जाऊंगा ॥

सरमाइल्लिज ने धन्यवाद दे कर अपने मित्र को उस कमरे में पहुचा दिया, जिसको उनके लिए खाली करा दिया था और खुद अपने कमरे में जा कर मन ही मन सोचने लगे, "यह बहुत अच्छा हुआ कि सर रिचर्ड तीन दिन तक यहां ठहर जायँगे, नहीं तो फ्लोरा से जान छुड़ाना मुश्किल हो जाता! हर घड़ी सिवाय रोने के और कुछ नहीं,—इसकी भी कोई हद है! जिस समय देखो चेहरे पर मुर्दनी छाई है, जब देखो आंखों से आंसू निकल रहे हैं। भाई! मुझको तो इन बातों से नफरत है। सररिचर्ड के ठहर जाने से बहुत अच्छा हुआ, मुझे यह भी लोग न कहेंगे कि लालच में आ कर लड़की को जबरदस्ती व्याह दिया, क्योंकि सररिचर्ड तो यहां मौजूद ही रहेंगे ॥"

इसी बीच में जब सररिचर्ड अपने कमरे में पहुचे तो उ-

न्होंने विलमट को कमरे की चीजे ठीक करते देखा। सररिचर्ड एक कुर्सी पर बैठ कर बडी देर तक किसी बात पर गौर करते रहे, इसके बाद विल्मट से बोले, "क्यों विलमट ! अब तुम्हारे दर्द का क्या हाल है ?"

विलमट०। आप की कृपा से अब मैं बिल्कुल अच्छा हूं॥

सर रि०। तुम जानते हो कि कल रात को हम लोग कहा ठहरे थे ?

विलमट०। हुजूर ! बरोंडल में॥

सर रि०। अच्छा तो तुम अभी बरोंडल जाओ। वहा कुछ बहाना कर देना कि वहा कोई चीज छूट गई है। म एक बहुत जरुरी काम तुमको सपुर्द करना चाहता हू॥

विलमट०। बहुत अच्छा॥

सर रि०। मुझको जरा कलम दावात दो, मैं एक चिट्ठी लिख दूंगा। बादशाह चार्ल्स आज कल "वारविक" में आये हैं उन्हीं के पास यह चिट्ठी भेजनी होगी "वारविक" यहां से कितनी दूर है ?

विलमट०। दो सौ मील॥

सर रि०। दो सौ मील ! खैर, अभी इतना समय है कि मैं अपनी चिट्ठी भेज सकूं।

विलमट ने लिखने का सामान ला कर टेबुल पर रख दिया और सर रिचर्ड ने दस मिनट में एक चिट्ठी लिख कर लिफाफे में बन्द करने बाद विलमट को दे कर कहा।

"लो यह लिफाफा लो और चले जाओ। देखो जरा भी देरी न होने पावे। मैं तुमको अशर्फियों की एक थैली देता हूं, इसे ले जाओ वरौडल में पहुंच कर एक आदमी को कुछ रुपया दे कर ठीक करना और उसको एक बहुत तेज चलने वाला घोड़ा किराये पर दिला कर तुरत वारविक भेज देना। लेकिन उससे कह देना कि शनिवार को सूरज डूबने से पहिले इस चिट्ठी का जवाब हमारे हाथ में ला दे, हम उसको इनाम में बहुत कुछ देंगे। अच्छा अब तुम जाओ।"

विलमट सलाम कर के चला गया। थोड़ी देर में भोजन के लिए बुलाहट हुई और सररिचर्ड उस कमरे में चले गए जहां सर माइलिज, फ्लोरा और ट्रेसी उनकी बाट जोह रहे थे।



छठवां बयान

इस कमरे की सब चीजें फ्लोरा के हाथों से सजाई गई थीं, परन्तु इस भोज में केवल चार आदमी शामिल थे, जिनमें से एक फ्लोरा भी थी। वह अपने चेहरे को हंसमुख बनाये रखने का बहुत उद्योग करती थी, लेकिन उसको यहां की चहल पहल जरा भी न भाती थी। इस समय उसकी आंखों के सामने उसके प्यारे हुवर्ट की तस्वीर फिर रही थी, लेकिन वह बड़ी अक्लमन्द थी और बहुत समझ बूझ कर काम करती थी। ट्रेसी को देखते ही उसका चेहरा गुस्से से लाल

हो आता था और उसकी बेहूदी बातें उसके दिल पर छुरी का काम करती थीं, लेकिन वह अपने भाव को इतना छिपाये हुए थी कि उसके मन की बात कोई नहीं समझता था। यद्यपि वह बहुत सीधी सादी और भली लडकी थी, परन्तु यदि कोई यह पूछे कि वह छिप छिप कर हूवर्ट से क्यों मिलती थी, तो इसका जवाब वे ही लोग दे सकते हैं जो यह बात जानते हैं कि प्रेम क्या चीज है। तौ भी फ्लोरा अपने बाप के वास्ते अपनी जान तक दे देने को तैयार थी। वह यह बिल्कुल नहीं सोचती थी कि उसका बाप कितना स्वार्थी है और वह सिवाय अपने फायदे के अपनी प्यारी बेटी के हानि अथवा लाभ का जरा भी खयाल नहीं करता। सर माइकिज अपने पुराने दोस्त से मिल कर बहुत खुश था और उन्हीं से ज्यादा बातें भी कर रहा था, अगर ट्रेसी कोई बेहूदी बात कहता भी तो वह कोई दूसरी बात छेड देता था।

सर रिचर्ड के विषय में हम कह सकते हैं कि वह बहुत ही गम्भीर आदमी थे। कभी कभी वह सब के चेहरे की तरफ देख लेते थे, जिससे जान पडता था कि वह कुछ जानना चाहते हैं। ट्रेसी के बारे में सिर्फ इतना ही कहना काफी होगा कि वह वाहियात बातें बहुत बकता था।

भोजन के बाद सब लोग तो बातें करने लगे, लेकिन ट्रेसी शराबी था, इसलिये वह शराब की बोतलें खाली करने लगा।

ट्रेसी०। (सर रिचर्ड से) मैं आपसे मिल कर बहुत

खुश हुआ, लेकिन आपकी पोशाक देख कर नहीं, क्योंकि
इनके बारे में तो चुप ही रहना अच्छा है।

सर मा० । मेरे दोस्त सररिचर्ड ने बहादुरी के बडे बा
काम किए हैं। मैं उस समय की बात कहता हूं जब हम दोनों
फौज में एक साथ थे।

सर रि० । खैर, यह तो तुम तारीफ करते हो, लेकिन तु
किससे कम थे ?

ट्रेसी० । बेशक, मैं भी मानता हू कि आप दोनों बडे बहा
दुर थे, लेकिन इससे फायदा ? मान लीजिये कि आपने मक्
को टाग चीर डाली और इन्होंने खटमल को अकेले म
डाला, तो इनसे क्या लाभ ? इसी से तो मैं बुड्ढों के प
बैठने से घबराता हूं।

यह कर ट्रेसी शराब उडेल कर पीने लगा। फ्लोरा वहा
उठ कर दूसरे कमरे में चली गई और सरमाइलिज को
बहुत क्रोध चढ आया, किन्तु सररिचर्ड चुपचाप थे,—उ
चेहरे से बिल्कुल नहीं मालूम होता था कि ट्रेसी की बे
बातों का उन पर क्या असर पडा।

ट्रेसी ग्लास पर ग्लास चढाता जाता था।—सर रि
थोडी देर तक कुछ सोचने के बाद सरमाइलिज से क
"तुम्हें कर्नल डार्मेन का भी कुछ हाल मालूम हुआ ?"

सर मा० । नही, मैं क्या जानू ।

सर रि०। तो तुम लन्दन का हाल बिल्कुल नहीं जानते ? खैर सुनो, बेचारा कर्नल डार्मन मर गया।

सर मा०। मर गया ! अफसोस !! यह कब ?

सर रि०। यही थोड़े दिन हुए।

सर मा०। क्या कुछ बीमार था ?

सर रि०। बीमार तो कुछ भी नहीं था,बस मौत की बीमारी थी, लेकिन जान पड़ता था कि उसकी मौत उसी दुःख से हुई, जो उस वक्त उसको हुआ था जब हम तुम दोनों उसी फौज में थे। उसके दुःख का कारण अर्थात् वह घटना तो तुमको याद होगी !!

सर मा०। खूब याद है। अफसोस ! कैसी दर्दनाक बात है !!

ट्रेसी०। कौन बात ?

सर मा०। कुछ नहीं, वह एक बड़ा लम्बा चौड़ा किस्सा है।

ट्रेसी०। लेकिन कोई सबब नहीं मालूम होता कि मैं यह किस्सा न सुन सकू !!

सर माइलिज चाहता था कि किसी तरह ट्रेसी खुश रहे, इस लिये सर रिचर्ड से कहा,—"क्या आप इतनी तकलीफ करेंगे कि कर्नल की कहानी ट्रेसी के आगे बयान करें ?"

सर रि०। हां हां, मैं अपने दोस्त का हुक्म जरूर मानूंगा। अच्छा सुनिये,—

यह कह कर सर रिचर्ड ने इस प्रकार कहना शुरू
और सब लोग ध्यान दे कर सुनने लगे।

जिस फौज में मैं और सर माइलिज नौकर थे, उसी फौज
में डार्मन नामक भी एक कर्नल था और उसकी मातहती में
फौज का एक पूरा हिस्सा था। कर्नल डार्मन बहुत ही नेक
आदमी था, लेकिन उसमें एक ऐब यह था कि वह कुछ घमंडी
था, जिसके सबब से वह अपने उन साथियों से जो उहदे में
उससे नीचे थे, बहुत मेल जोल नहीं रखता था।

जिस समय कर्नल डार्मन फौज में दाखिल हुआ था, उस
समय उसकी उम्र अट्ठाइस वर्ष की थी। कुछ ही दिनों में
उसने ऐसे अच्छे अच्छे काम किये कि फौज के छोटे बड़े सब
अफसर उससे बहुत खुश हुए। भला वे खुश क्यों न होते
अच्छे और मेहनती आदमी को सब ही चाहते हैं। खैर, फौज
में दाखिल होने के दो वर्ष बाद कर्नल ने एक बहुत ही खूब
सूरत लेडी से शादी की और उसको बहुत प्यार करने लगा
लेकिन उसकी स्त्री में दो एक बात ऐसी थी जिनसे वह कुछ
परेशान रहता था। वह बहुत गुस्सैल थी, जरा जरा सी बात
पर बिगड़ जाती थी और यह चाहती थी कि सब काम उसके
मन के मोफिक हो, इतना होने पर भी उसमें एक ऐसा गुण
था जो उसके सब दोषों को दूर कर देता था अर्थात् वह बड़ी
ही खूबसूरत थी, अगर वह किसी दावत या जल्से में जाती
तो सब आदमियों की निगाह अधिकतर उसी पर पड़ती थी

उसकी आवाज इतनी सुरीली थी कि सब आदमी उसकी बातें सुनने की इच्छा करते थे। उसकी आंखें ऐसी रसीली थीं कि सब यही चाहते थे कि वह एक बार मेरी ओर देख ले, चाहे गुस्से ही से क्यों न देखे। इन्हीं कारणों से कर्नल उसको बहुत प्यार करता था और उसको इस बात का घमंड था कि उसे ऐसी खूबसूरत स्त्री मिली है कि उससे बढ़ कर दुनिया में शायद ही कोई दूसरी औरत होगी।

कर्नल की उस खूबसूरत जोरू का नाम एमिलिन था। यह बात भी मशहूर थी कि एमिलिन के बाप ने उसकी शादी कर्नल के साथ जबरदस्ती कर दी थी, नहीं तो वह खुद उससे विवाह करना नहीं चाहती थी। उसकी इच्छा किसी और के साथ अपनी शादी करने की थी जिसको वह पहले ही से प्यार करती थी। यद्यपि एमिलिन ने चाहा कि उसका बाप अपना इरादा बदल दे, परन्तु उसने अपना इरादा नहीं बदला, बल्कि कुछ दिन के लिये उसको फ्रांस रवाना कर दिया। एमिलिन के जाने के बाद उस आदमी का हाल कुछ नहीं मालूम हुआ जिसको वह प्यार करती थी। आठ महीने के बाद एमिलिन फ्रांस से घर लौटी। उस समय उसके बाप ने कर्नल डार्मन को बुला भेजा और दोनों की शादी जबरदस्ती कर दी।

कर्नल की शादी के एक महीने के बाद एक दिन एक नया आदमी फौज में आया। उसके कपड़े बहुत मैले थे। यह नहीं कहा जा सकता कि उसने कभी अच्छी पोशाक न पहिनी

होगी, क्योंकि देखने में वह गन्दा नहीं मालूम होता था, बल्कि उसका बदन सुडौल और खूबसूरत था और अच्छी पोशाक उस पर अवश्य ही खूब भली लगती। उसने फौज के सब से बड़े अफसर से प्रार्थना की कि वह फौज में भर्ती होना चाहता है। अफसर ने कर्नल डार्मन की सिफारिश चाही। निदान वह कर्नल डार्मन के पास पहुंचा उन्होंने उसकी सिफारिस तो नहीं की, लेकिन यह कहा कि भर्ती हो जाने के बाद मैं उसकी चाल चलन जांच लूंगा तब उसके बारे में कुछ कहूंगा।

खैर वह आदमी फौज में रख लिया गया और रजिस्टर में उसने अपना नाम हार्वी लिखाया। कुछ ही दिनों में उसने अपना काम अच्छी तरह सीख लिया और मिहनती तथा खुशमिजाज होने के कारण सब का दोस्त बन गया, लेकिन हार्वी में एक विशेष बात थी जो बहुत ही गौर करने से मालूम होती थी अर्थात् उसके मिजाज में बहुत बेचैनी थी, क्योंकि उस के चेहरे से मालूम होता था कि वह कुछ उदासी और अफसोस में रहता है॥

निदान धीरे धीरे समय बीतता गया। सर्दी का मौसिम बीत गया और वसन्त ऋतु का राज्य स्थापित हुआ। चारों तरफ का दृश्य सुहावना सुहावना दीखने लगा। यह मकान जिसमें कर्नल की स्त्री एमिलिन रहती थी, उन मकानों से कुछ दूर पर था जो फौजी लोगों को सरकार से मिले थे॥

एक दिन इसी मौसिम अर्थात् एप्रिल के महीने में शाम के वक्त अकेले बैठे रहने के कारण एमिलिन का जी बहुत घबरा उठा, क्योंकि उन दिनों कर्नल डार्मन हमेश' अपने फौजी दोस्तों के साथ रहा करते थे, एमिलिन उस वक्त अपने घर से जी बहलाने के लिये अकेले चल खड़ी हुई। वह बड़ी देर तक बड़े बड़े मैदानों और हरे भरे खेतों की सैर करती रही, जिनकी लहलहाती हुई सब्जी पर उसकी निगाह रुक रुक कर पड़ती और आनन्द लेती थी। इस सैर में बहुत देर लग गई। एमिलिन थोड़ी ही दूर आगे गई होगी कि उसे कुछ धूंआ दिखाई दिया जो एक घाटी में से उठ रहा था। उसने सोचा कि शायद वहां कुछ बस्ती होगी। वह अभी यही सोच रही थी कि उसे कुछ खुशी की आवाजें सुनाई दीं। यह मालूम हुआ कि जैसे कुछ लोग हंस हंस कर बातें कर रहे हैं, उसमें बूढ़े बच्चे सब ही की आवाजें मिली जुली मालूम होती थीं। एमिलिन ने उस तरफ ज्यादा ध्यान न दिया और और उसको उधर ध्यान देने की कुछ ऐसी जरूरत भी नहीं थी क्योंकि यदि यह मालूम हो कि इस जगह कुछ बस्ती है तो ताज्जुब ही क्या था॥

सर रिचर्ड ने इस किस्से को यहां ही तक कहा था कि डूसी बोल उठा, "और वहां रहते कौन लोग थे।"

सर रि०। देखिये, आप ही मालूम हुआ जाता है॥

यह कह कर सर रिचर्ड ने फिर कहना शुरू किया॥

उस वक्त एमिलिन ने सोचा कि सैर करने में बहुत देर हो गई है, क्योंकि सूरज डूब चुका था और अंधियारी चारों ओर से झुकी आती थी, इसलिये वह आगे न बढ़ी और जब उसने अन्दाज किया तो उनको मालूम हुआ कि उसको अभी घर तक पहुचने में कम से कम एक घंटा लगेगा। खैर, वह अपने घर को तरफ मुड़ी, लेकिन दस ही पांव कदम आगे बढ़ी होगी कि उसको ऐसा जान पड़ा कि कोई पीछे पीछे आ रहा है। यह देख वह डरी, परन्तु तुरन्त ही एक छोटे बच्चे के हंसने की आवाज उसको सुनाई दी। उसने मुड़ कर देखा तो मालूम हुआ कि वह एक छोटा बच्चा है जिसकी उम्र छः वर्ष के लगभग होगी। एमिलिन ने उससे कड़ी आवाज में पूछा, "क्यों! तू क्या चाहता है ?" लड़का रोने लगा और बड़े अफसोस के साथ बोला कि "देखो, तुम मुझ पर नाराज न होओ मैं तुमको हाथ जोड़ता हूं, मुझको एक पैसा दे दो, नहीं तो वह मुझको मारेंगे और कहेंगे कि मैं किसी काम का नहीं हूँ॥"

एमिलिन०। (लड़के की मैली कुचैली पोशाक से घबरा कर, लेकिन फिर भी मीठी और सुरीली आवाज में) कौन मारेंगे ?

लड़का०। (उस तरफ इशारा करके जिधर से धुआं उठ रहा था) वे जिप्सी* ॥

---

* यह एक जङ्गली जाति का नाम है॥

पमिलिन०। अहा तो तुम जिप्सियों के साथ रहते हो! क्या वे तुमसे मेहरबानी का वर्ताव करते हैं या हमेशा तुम पर कड़ाई करते हैं? वे तुम्हें क्यों मारते हैं? बड़े बेरहम हैं? तुम्हें खाने पीने की तकलीफ़ तो नहीं होती? और हां, क्या वे तुम से हमेशा भीख मंगवाया करते हैं?

लड़का तुम तो ऐसी जल्दी जल्दी कह गईं कि जरा भी मेरी समझ में न आया॥

पमिलिन०। उंह! गया है बिल्कुल। न मालूम कौन है, कोई चोर चोर होगा। (जोर से) अच्छा लो॥

यह कहते हुए उसने चवन्नी उस लड़के के हाथ में रख दी और चल पड़ी। रास्ते भर वह न मालूम किन किन बातों को सोचती जाती थी। उस वक्त उसके चेहरे से बहुत उदासी टपकती थी। जिस समय वह अपने बंगले पर पहुँची, उसने अपनी लौंडी को दर्वाजे पर खड़ी देखा, मानो वह उसी की बाट जोह रही थी। उसने देखा कि लौंडी के मुख पर हवाइयाँ उड़ रही हैं और वह बहुत ही घबड़ाई हुई है। लौंडी ने देखते ही आगे बढ़ कर कहा, "हाय! आप इस वक्त पहुँचीं!!"

पमिलिन०। (घबरा कर) क्या पञ्जिला! क्या हुआ! क्या कर्नल—मेरे पति, घर में हैं?

पञ्जिला०। जी हां, घर में हैं और ...

पमिलिन०। (घबरा कर) और क्या!!

पञ्जिला०। और . . हाय!!

एमिलिन०। अरे कुछ कह भी तो कि क्या हुआ ?

एञ्जिला०। कर्नल . . .!

एलिमिन०। (बेचैन हो कर) बस जो कुछ कहना हो, जल्दी कहो, मैं ज्यादा देर तक नहीं रुक सकती, तुरन्त कहो॥

एञ्जिला०। घायल हो गए !!

एमिलिन०। घायल ! सो कैसे ?

वह जवाब के लिये न ठहरी और फौरन् अन्दर चली गई। सीढ़ियों का एक सिलसिला तै कर के वह अपने पति के कमरे में पहुँची। कर्नल डार्मन अपने पलग पर लेटा हुआ था। उसके गाल पीले हो गए थे और चेहरे पर मुर्दनी छाई थी, लेकिन जब उसने एलिमिन को अपने पास देखा तो वह कुछ मुस्कुराया॥

एमिलिन०। तुमे

कर्नल०। नहीं कुछ नही, बस थोडे दिनों में अच्छा हो जाऊगा॥

एमिलिन०। प्यारे डार्मन ! क्या तुम घायल हुए हो ! तुम मुझसे छिपाते क्यों हो ? हाय ! तुम घायल हुए और मैं यहाँ मौजूद न था !

कर्नल०। खैर कुछ हर्ज नही बलिक मैं तो खुश हूँ कि उस समय तुम यहा मौजूद न थीं, नहीं तो मेरा खून तुमसे न देखा जाता, अवश्य ही तुमको दु ख होता॥

एमिलिन कर्नल के पास बैठ गई। उसने देखा कि कर्नल

के पावों पर पट्टियां बंधी हुई हैं और वह बिल्कुल कमजोर हो रहा है। एमिलिन का जी भर आया। यद्यपि इसका मिजाज कड़ा था, लेकिन वह ऐसी भी नहीं थी कि अपने पति को भूल जाती। वह अपने मन में अफसोस करने लगी कि कर्नल के घायल होने के समय वह घर में क्यों न रही, ताकि वह उसे हाथों हाथ लेती, उसकी सेवा करती, उसके घावों को अपने हाथों से बांधती और उसके पास बैठ कर उसका जी बहलाती। उसकी दो तीन घण्टे की गैरहाजिरी में क्या से क्या हो गया! खेर उसने कर्नल से घायल होने का सबब पूछा और कर्नल ने सब हाल बयान किया॥

ट्रेसी०। हां तो कर्नल के घायल होने की क्या वजह थी?

सर रिचर्ड०। देखिये, वह भी कहता हूँ। जिस वक्त से हार्वी फोज में भरती हुआ, कर्नल डार्मन उसको हमेश नफरत की निगाह से देखता था। यह नहीं कहा जा सकता कि क्यों, लेकिन देखने में हार्वी बहुत ही नेक और सीधा आदमी मालूम पड़ता था और वह अपने दोस्तों से बहुत अच्छा बर्ताव करता था, इसी लिए सब लोग उससे खुश रहते थे, शायद इसी सबब से कर्नल डार्मन उससे बुरा मानता था, क्योंकि प्राय लोग ऐसे भी होते हैं कि खुद उनकी चाल चलन अच्छी नहीं होती तो वे दूसरों से डाह रखते हैं। कर्नल डार्मन को बहुत बुरा मालूम होता था कि हार्वी को लोग इतना क्यों मानते हैं। उसकी चिन्ता बढ़ती गई और

आखिर उसने हार्वी को नीचा दिखाने का विचार किया, लेकिन उसकी एक भी चाल न लगती थी क्योंकि हार्वी अपना काम बड़ी मुस्तैदी से करता था, कर्नल ने मन में ठान लिया कि किसी न किसी मौके पर उसको जरूर नीचा दिखना चाहिये ॥

जिस दिन एमिलिन सैर को गई थी उस दिन की बात है कि कर्नल डार्मन अपने बराबर वाले उहदेदारों के साथ भोजन कर रहा था। जब भोजन समाप्त हुआ तो सब लोग हंसी दिल्लगी की बातें करने लगे। कोई उठ कर अपने घर चला, किसी ने शतरंज बिछाई और दो चार आदमी बैठ गये कि घटे दो घटे इसी मे जी बहलावें। कर्नल डार्मन चुरट पीता हुआ कमरे के बाहर निकल आया और इधर उधर टहलने लगा। थोड़ी देर में उसने देखा कि दो फौजी सिपाही उसके पास से हो कर निकल गये और उन्होंने खयाल भी नहीं किया कि उनका अफसर खड़ा है। जब वे लोग कुछ आगे बढ गए तो कर्नल ने उनको पुकारा। वे पास आये तो कर्नल ने उन्हें पहिचाना। एक हार्वी था और दूसरा एक सिपाही।

कर्नल०। हार्वी ! क्या मैं यह समझूं कि तुमने मुझको देखा नहीं इस लिये मेरे पास से हो कर निकले और मुझको सलाम नहीं किया, या यह समझूं कि तुम्हारी ऐसी आदत ही है।

हार्वी०। महाशय मैं आपसे माफी चाहता हूं। जान बूझ

कर मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता कि अपने अफसर को सलाम न करूं, मुझसे भूल हो गई ॥

कर्नल० । लेकिन मुझको तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं होता । अच्छा यह तो बताओ कि तुमने मुंह क्यों फेर लिया?

हार्वी० । जी नहीं, मुंह तो मैंने नहीं फेरा था ।

कर्नल० । (कुछ गुस्से से) तो क्या मैं झूठा हूं? अच्छा अपने साथी से कहो कि वह चला जाय । मुझको तुमसे कुछ कहना है और यह मौका भी अच्छा है ।

हार्वी का साथी चला गया और जब हार्वी अकेला रह गया तो कर्नल बिगड़ कर कहने लगा, मैं देखता हूँ कि तुम्हारी चाल में कोई विशेष बात है जो मुझको पसन्द नहीं आती । मैं समझता हूं कि तुम पढे लिखे भी हो और उसकी वजह से प्रसिद्ध होना चाहते हो । मैंने प्राय सुना है कि तुम्हारी बोल चाल बहुत अच्छी है और तुम्हारी बातचीत से मालूम होता है कि तुम कुछ फिलासोफी भी जानते हो, तो तुम्हारे मिजाज में नजाकत भी जरूर होगी, क्योंकि पढे लिखे आदमी प्राय नाजुक मिजाज हुआ करते हैं, लेकिन फौज में विद्वानों की जरूरत नहीं है, बल्कि ऐसे आदमियों का काम है जो केवल लडाई और मार काट के लायक हों । मैंने अक्सर सुना है कि तुम किताबें भी बहुत देखा करते हो, तुम्हारे और अफसरों को भी इसकी खबर पहुंची है । यह क्या बात है?

अब हार्वी ने अपना ढंग बदला। कर्नल की बातों से उनको मालूम हुआ कि वह बड़ा दुष्ट है, इसलिये उसने उसी तरह कड़ाई से कहा, जिस तरह कर्नल ने बातें की थीं, "आप कहते हैं कि मैं प्रसिद्ध होने की कोशिश करता हूं ? मुझको तो याद नहीं कि मैंने कभी इसकी कोशिश की हो। रहो मेरे पढ़ने लिखने की बात, सो मैं साफ कहे देता हूं कि मेरे अफसरों का सिर्फ इतना ही अधिकार है कि वे मेरे उन कामों की जांच करें जिनके लिये मैं नोकर हूं। जब मैं उन कामों को अच्छी तरह करता होऊं तो उनको मेरे दूसरे कामों में दखल देने की कोई जरूरत नहीं है।"

कर्नल०। तो तुमको अपने और अपने अफसरों में कुछ भी फर्क नहीं मालूम होता ! अफसरों की बड़ाई तुम इतनी ही मानते हो कि वे फौजी कायदे से तुम्हारे अफसर हैं, लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि जेन्टिलमैन और मामूली आदमी में बड़ा भेद है ?

हार्वी०। लेकिन मैं नहीं समझता कि जेन्टिलमैन कहते किसको हैं। क्या बहुत सा रुपया इकट्ठा करने से आदमी जेन्टिलमैन हो जाता है, या अच्छे कपड़े पहिनने से ?

कर्नल०। तुम नहीं जानते ? खैर ! मैं एक अदने आदमी से ज्यादा बातचीत नहीं करना चाहता।

हार्वी०। अदना आदमी ? महाशय ! मातहत कहिये।

कर्नल० नहीं मैं अदना आदमी कहूँगा। क्या तुम अपने को मेरे बराबर समझते हो ?

यह कह कर मारे गुस्से के कर्नल हार्वी की तरफ बढ़ा, लेकिन फिर कुछ सोच कर रुक गया। हार्वी ने चारों ओर देखा, परन्तु वहां कोई नहीं था। कर्नल की बातों से उसे भी गुस्सा चढ़ आया था। उसको यही मालूम हुआ कि कर्नल उसको नीचा दिखाना चाहता है, तो भी उसने अपने गुस्से को रोक कर कहा, "कर्नल डार्मन! हम लोगों में बिगाड़ होना बड़े अफ़सोस की बात है। जब से मैं इस फौज में आया तब से मेरी यही इच्छा रही कि अपने अफसरों का हुक्म ..., लेकिन आपके बर्ताव से मैं बहुत दु:खित हुआ। मैं ...र हो कर आपसे कहता हूं कि यद्यपि आप मेरे अफसर ...कि आप ज्यादा तनख्वाह पाते हैं और आपके कपड़े ...त दामों के हैं, तो भी आप खूब समझ लीजिये ...होने में मैं आप से किसी तरह कम

अब हार्वी ने अपना ढंग बदला। कर्नल की बातों से उनको मालूम हुआ कि वह बड़ा दुष्ट है, इसलिये उसने उसी तरह कड़ाई से कहा, जिस तरह कर्नल ने बातें की थीं, "आप कहते हैं कि मैं प्रसिद्ध होने की कोशिश करता हूँ ? मुझको तो याद नहीं कि मैंने कभी इसकी कोशिश की हो। रही मेरे पढ़ने लिखने की बात, सो मैं साफ़ कहे देता हूं कि मेरे अफ़सरों को सिर्फ इतना ही अधिकार है कि वे मेरे उन कामों की जांच करें जिनके लिये मैं नौकर हूं। जब मैं उन कामों को अच्छी तरह करता होऊं तो उनको मेरे दूसरे कामों में दखल देने की कोई जरूरत नहीं है।"

कर्नल०। तो तुमको अपने और अपने अफ़सरों में कुछ भी फर्क नहीं मालूम होता ! अफ़सरों की बड़ाई तुम इतनी ही मानते हो कि वे फौजी कायदे से तुम्हारे अफ़सर हैं, लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि जेन्टिलमैन और मामूली आदमी में बड़ा भेद है ?

हार्वी०। लेकिन मैं नहीं समझता कि जेन्टिलमैन कहते किसको हैं। क्या बहुत सा रुपया इकट्ठा करने से, आदमी जेन्टिलमैन हो जाता है, या अच्छे कपड़े पहिनने से ?

कर्नल०। तुम नहीं जानते ? खैर ! मैं एक अदने आदमी से ज्यादा बातचीत नहीं करना चाहता।

हार्वी०। अदना आदमी ? महाशय ! मानहानि कहिये !,

कर्नल० नहीं मैं अदना आदमी कहूंगा। क्या तुम अपने को मेरे बराबर समझते हो?

यह कह कर मारे गुस्से के कर्नल हार्वी की तरफ बढ़ा, लेकिन फिर कुछ सोच कर रुक गया। हार्वी ने चारों ओर देखा, परन्तु वहां कोई नहीं था। कर्नल की बातों से उसे भी गुस्सा चढ़ आया था। उसको यही मालूम हुआ कि कर्नल उसको नीचा दिखाना चाहता है, तो भी उसने अपने गुस्से को रोक कर कहा, "कर्नल डार्मन! हम लोगों में बिगाड़ होना बड़े अफसोस की बात है। जब से मैं इस फौज में आया तब से हमेश मेरी यही इच्छा रही कि अपने अफसरों का हुक्म मानूं, लेकिन आपके बर्ताव से मैं बहुत दुखित हुआ। मैं लाचार हो कर आपसे कहता हूं कि यद्यपि आप मेरे अफसर हैं, क्योंकि आप ज्यादा तनख्वाह पाते हैं और आपके कपड़े लत्ते बहुत दामों के हैं, तो भी आप खूब समझ लीजिये कि भला आदमी होने में मैं आप से किसी तरह कम नहीं हूं।"

कर्नल०। तुम भले आदमी कि भले आदमी की दुम!!

हार्वी०। अफसोस कर्नल! तुम्हारी चाल बिल्कुल नीचों की सी है। तुम उसके दिल को दुखा रहे हो जो किस्मत का सताया हुआ है और जिसने लाचारी से तुम्हारी मातहती में नौकरी की है

यह कहते कहते हार्वी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया,

उसकी भौंहों पर बल पड़ गए और उसने नफरत की निगाह से कर्नल की ओर देखा।

कर्नल० । नीच ! बदमाश ! तू मेरी इज्जत को नहीं जानता ?

यह सुनते ही हार्वी की आंखों से चिङ्गारियां निकलने लगीं। उसने बिल्कुल नहीं सोचा कि कर्नल मेरा अफसर है और झपट कर एक थप्पड़ मार ही तो दिया। कर्नल को बहुत गुस्सा चढ़ आया और उसने अपनी तलवार निकाल कर हार्वी पर वार किया, लेकिन उसका वार खाली गया और तुरन्त ही उसने अपने को घायल पाया।"

सर रिचर्ड ने यहां तक कहा था कि ट्रेसी कहने लगा, "हार्वी ने उसे घायल किया ?"

सर रिचर्ड०। हां और क्या। यह तो कर्नल के घायल होने का वृत्तान्त है, आगे सुनो कि कर्नल के जख्मी होने के कई सप्ताह बाद एक दिन एमिलिन अपने कमरे में बैठी हुई अपनी जिन्दगी की पुरानी बातें सोच रही थी। उस समय को, जब नई नई उम्मीदों ने उसके दिल में घर करके उसको आसमान पर पहुंचा दिया था, वह वर्त्तमान समय से मिलान करती तो उसके चेहरे पर दुःख और अफसोस की झलक दिखाई देती। उसको अपनी उस मुहब्बत का ध्यान आता, जो उसको वाल्टर के साथ थी। उसको ये बातें भी याद आईं कि उसके बाप ने पहिले तो उसको फ्रांस भेज दिया था, फिर

जबर्दस्ती कर्नल डार्मन के साथ उनकी शादी कर दी थी।

उसने सोचा कि कर्नल डार्मन उसे चाहता है, लेकिन उसीके साथ उसको यह भी मालूम हुआ कि वह स्वयम् कर्नल डार्मन को उतना नहीं चाहती कि जितना एक स्त्री को अपने पति को चाहना चाहिये।

वह यही सोच रही थी कि इतने में एक लौंडी एक चिट्ठी लिये हुए कमरे में आई। एमिलिन ने सिर उठा कर देखा और चिट्ठी ले ली।

एमिलिन०। यह चीठी किसके नाम है?

लौंडी०। मुझे मालूम नहीं, मुझसे यही कहा गया है कि आपको दी जाय।

एमिलिन०। लेकिन इस पर पता वगैरह तो कुछ नहीं लिखा है! अच्छा तुम जाओ।

लौंडी चली गई तो एमिलिन ने चीठी खोली। अक्षर देखने से मालूम होता था कि चीठी बहुत जल्दी में लिखी गई है। चीठी में यह लिखा था,—

एमिलिन!

यम का दूत मेरी जान लेने के लिये सिर पर खड़ा है। तुम्हारा ओफ! जिसके नाम से आग लग जाती है तुम्हारा पति, तुमको बहुत चाहता है। तुम्हारे मुंह से एक शब्द भी मेरी जान बचाने के लिये काफी होगा। वह तुम्हारा हुक्म अवश्य मानेगा।

पमिलिन! अगर तुम्हारे दिल में उस पुरानी मुहब्बत की जरा भी गर्मी बाकी हो, जो किसी समय तुम्हें मेरे साथ थी, तो मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि तुम उस आदमी की जान बचा लो जिसने केवल तुम्हारे पास रहने के लिये ऐसी तुच्छ नौकरी स्वीकार की। पमिलिन! तुमसे उसी आदमी की जान बचाने की प्रार्थना करता हू, जिसके दिल में तुम्हारी तस्वीर ने उस वक्त से घर कर लिया है, जब तुम्हारी शादी भी नहीं हुई थी।

हार्वी के नाम से मैं फौज में नोकर हुआ और यद्यपि दिल नहीं मानता था, लेकिन मैंने कभी यह इच्छा नहीं की कि तुम से मिलूं और न यह सोच कर कभी अपना नाम ही किसी को बतलाया कि शायद ऐसा करने से भेद खुल जाय और तुम्हारी बेइज्जती हो। जब तुम मैदान में सैर करने को निकलती थीं तो मैं तुमको केवल दूर से देख लिया करता था। उस जमाने को याद करो जब तुम्हें देखने से खुशी होती थी, अब इतना फर्क है कि तुम्हें देखते वक्त दिल से "आह" निकल जाती है।

मैंने सुना है कि कर्नल कल लन्दन जाने वाला है। वह अगर मेरे कैदखाने पर पहरा देने वालों से कह दे, तो वे जरूर मंजूर कर लेंगे कि मैं रात के वक्त निकल जाऊं।

इस अन्धेरी कोठरी में, जहां मैं कैद हूँ, वहां भी तुम्हारी याद मेरे दिल में है और यह याद उस वक्त तक न भूलेगी,

जब तक मौत मुझको इस दुनिया से अलग न कर देगी।

तुम्हारा—

वाल्टर।

चीठी एमिलिन के हाथ से गिर पड़ी और वह फूट फूट कर रोने लगी। वह इश्क की आग जो किसी समय उसके दिल में सुलग चुकी थी, फिर से भभक उठी। उम्मीदों का वह फूल, जो किसी जमाने में खिल कर कुम्हला गया था, फिर सरसब्ज हो गया। वह नाउम्मीदी जो वाल्टर के मरने का समाचार सुन कर उसके दिल में पैदा हो गई थी, थोड़ी देर के लिये दूर हो गई। उसको मालूम हुआ कि उसका सच्चा चाहने वाला अभी तक जीता जागता है। उसी की चीठी थी, जिसको याद हमेशा उसके दिल में बनी रहती थी, जिसकी मुहब्बत भरी निगाहें उसके दिल में गुदगुदी पैदा कर देती थीं और जो किसी समय साये की तरह उसके साथ साथ रहता था।

यद्यपि एमिलिन की उम्मीदें सदैव के लिये टूट गई थीं, यद्यपि उसको निश्चय हो गया था कि मेरा प्यारा अब इस संसार में नहीं है, यद्यपि वह सोच चुकी थी कि अब उसको कभी सच्ची खुशी न होगी, तो भी, जैसा कि वाल्टर ने अपनी चीठी में लिखा था कि "अगर तुम्हारे दिल में उस पुरानी मुहब्बत की जरा भी गर्मी बाकी हो . " बेशक उसके दिल में उस मुहब्बत की गर्मी अब भी बाकी थी, अब भी वह कभी कभी

"प्यारे वाल्टर ! प्यारे वाल्टर !!" कह कर रोया करती थी, अब भी पुरानी और नई बातों का मुकाबिला कर के पश्चात्ताप किया करती थी, लेकिन इतना सब होने पर भी वह जानती थी कि विवाह हो जाने के कारण वह दूसरे की हो चुकी। वह खूब जानती थी कि उसको कौन सी चाल चलनी चाहिये। प्रायः वह इन बातों को दिल से भुला देने की कोशिश किया करती थी, लेकिन यह चीठी उसको ऐसे समय में मिली, जब वह समझ चुकी थी कि उसका चाहने वाला अब जीवित नहीं है और अफसोस करते करते वह नाउम्मीद हो चुकी थी, उस समय उसको मालूम हुआ कि उसका प्यारा वाल्टर अभी संसार में मौजूद है और उसने केवल एमिलिन ही के पास रहने के खयाल से नौकरी की और ऐसी तकलीफ उठाई। ये ऐसी बातें थीं, जिनसे एमिलिन का दिल उसके अधिकार में न रह सका। यद्यपि उसने अपने बहुत संभालना चाहा, लेकिन वह सभल न सकी। उसने चीठी पढ़ी, फिर इधर उधर देखा, फिर पढ़ी, इस तरह उसने कई बार उलट फेर किया। वह उसके शब्द शब्द पर गौर करती थी और गौर ही नहीं करती थी, वरन् उनको मुहब्बत की निगाहों से देखती थी।

थोड़ी देर के बाद एमिलिन ने निश्चय कर लिया कि अब उसको क्या करना चाहिये, उसने अपने थरथराते हुए हाथों से चीठी को अगीठी में जला दिया और जब तक उसका एक एक खण्ड जल कर खाक न हो गया तब तक वह घबराहट

की निगाहों से चारों तरफ देखती रही।

दूसरे दिन सुबह से शाम तक वह अपने पति कर्नल डार्मन को समझाती रही कि वह हार्वी को, जो अफसर को बुरा भला कहने और घायल करने के अपराध में पकड़ा गया था, छुड़वा दे। लेकिन उसने यह नहीं बतलाया कि हार्वी हकीकत में वही आदमी है जिसको वह जान से ज्यादा प्यार करती है।

निदान वह दिन भी आ गया जो हार्वी के कत्ल के वास्ते नियत किया गया था। सुबह का समय था और यद्यपि यह समय सुहावना हुआ करता है, लेकिन आज उसकी दिलचस्पी और उसका सुहावनापन न मालूम कहां है? वे ही फौजी लोग जिन्हें मार काट के सिवाय कुछ अच्छा ही नहीं लगता है, आज उदास मालूम पड़ते हैं। लेकिन इस उदासी का खास सबब है, क्योंकि वह मार काट और होती है जो उनको लड़ाई के मैदान में करनी पड़ती है। उस समय वे अपनी बहादुरी से काम लेते हैं। उस वक्त उनको अपने और अपने देश के बचाव का खयाल रहता है। उस समय वे देखते हैं कि उनका दुश्मन उनके सिर पर चढ़ा आता है। ये बातें उनके जोश को उस समय बढ़ा देती हैं, परन्तु ऐसी दशा में जब कोई भी सिपाही का मददगार न हो, उसके हाथ पाँव रस्सियों से जकड़ दिये गए हों और वह अफसोस निगाह से उस दुनिया को देखता हो जिससे वह शीघ्र विदा होने वाला है, तो कौन ऐसा दिल है जो न पसीजे?

बचाई कि मैं उसके खून का अपराधी न होऊँ ॥

एमिलिन० । तुम्हीं सोचो । मुझसे यह कब देखा जाता कि किसी बेकसूर का खून करा कर तुम ईश्वर के अपराधी बनते ॥

कर्नल० । उह, यह कोई बात है, यह तो केवल तुम्हारे दयामय स्वभाव की बातें हैं ।

ये दोनों इसी प्रकार बातें करते जा रहे थे कि थोडी दूर पर इनको एक घाटी दिखाई दी और उसके साथ ही कुछ लोगों के बातें करने की आवाजें भी इनके कानों में सुनाई पडीं । उस जगह कुछ टूटे फूटे भोपडे पडे हुए थे और जिप्सियों के दो चार खेमे भी थे । एक भोपडे के दरवाजे पर आग जल रही थी और वहां से धुआ उठ कर चारों ओर फैल रहा था । यहां पहुँच कर एमिलिन चौंकी । उसको उस दिन की बात याद आई जिस दिन उसे वह गिप्सी लडका मिला था जिसे उसने चवन्नी दी थी ।

कर्नल डार्मन ने उस समय लौटने का इरादा किया । दोनों कुछ दूर आगे बढ़े होंगे कि वही उस दिन वाला लडका एमि-लिन के पास आ कर भीख मागने लगा । एमिलिन ने उसको अच्छी तरह पहिचान लिया । यह वही लडका था जो उसको पहिले मिल चुका था ।

कर्नल० । (गुस्से से लडके की ओर देख कर) दूर हो यहां से, तू कौन है ?

यह कहते हुए उसने अपनी छड़ी लड़के के सिर पर जोर से मारी, जिससे उसका सिर चकरा गया और वह चिल्ला कर रोने लगा।

एमिलिन०। हाय! बेचारे बच्चे को क्यों मारे डालते हो। अफसोस! तुम बड़े निर्दयी हो। भला उसने तुम्हारा क्या कसूर किया था। हाय! बेचारा लड़का! न मालूम यह किस का बच्चा है। देखो तो विचारा कैसा बिलक बिलक कर रो रहा है।

यह यही कह रही थी कि एक ओर से आवाज आई, "हेनरी! हेनरी!! आ मेरे बच्चे आ। क्या हुआ तू क्यों रोता है। बेवकूफ। इसीसे समझाता हूं कि शाम को न निकला कर"

लड़का रोता हुआ उस ओर चला, जिधर से आवाज आई थी, लेकिन उसके साथ ही एक फटे हुए खेमे से एक लंबा और खूबसूरत आदमी मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए निकल आया।

आदमी०। क्यों रे तुझको किसने मारा है?

कर्नल डार्मन०। (ताज्जुब से) ओहो, हार्वी! तुम हो! तुम भी विचित्र आदमी हो। तुम अब तक यहां क्यों ठहरे रहे? क्या मुझे बदनाम कराओगे? क्या तुम फौजी कानून नहीं जानते? तुम नहीं जानते कि मैंने तुम को किस तरह मौत के पंजे से बचाया?

घाल्टर०। (क्योंकि यह वास्तव में वाल्टर था, परन्तु

कर्नल डार्मल यह हाल नहीं जानता था) क्या आप पूछते हैं कि मैं यहां क्यों हूं ? मैं.. .. . .

यह कहते कहते वह रुक गया। कर्नल डार्मल ने फिर पूछा "हां हां, आगे कहो।"

वाल्टर०। (उदास हो कर) जी कुछ नहीं, यही कहता था कि अचानक मैं इन गिल्लियों की ओर आ निकला। यहां मुझको यह गरीब बच्चा मिला, जिसकी बेरहम मा उसकी खबर नहीं लेती और जो अब भीख मांग कर अपना पेट पालता है।

कर्नल०। (उस जिप्सी लडके की ओर उंगली दिखा कर) तो क्या वह यही लड़का है ? लेकिन तुमको क्या पडी है कि तुम दूसरों के बच्चों की फिक्र करते फिरो ? अगर तुमने यह उपकार किया है, तो भी यह ठीक नहीं है। क्या तुम नहीं जानते कि अगर यह मालूम हो जाय कि मैंने तुमको चुपचाप भगा दिया है, तो मेरी कितनी बदनामी होगी ? (लडके की तरफ देख कर) यह कौन लड़का है ? कैसा गन्दा है।

वाल्टर०। महाशय ! यह मेरा लडका है।

यह अद्भुत बात सुनते ही एमिलिन बेचैन होकर भर्राई हुई आवाज में चीख उठी, वाल्टर वाल्टर ! क्या यह . . यह हमारा बच्चा है ?" वह अपने को रोक न सकी। जोश में आ उसने जिप्सी लडके को उठाकर अपनी छाती से लगा लिया।

कर्नल०। (गुस्से से लाल हो कर) हैं यह क्या बात है !

वाल्टर ! यह क्या है ? एमिलिन ! तुरत बता, यह तेरा लडका कैसे हुआ ?

एमिलिन अपने पति के पावों पर गिर पडी और रो रो कर कहने लगी, "ईश्वर के लिए मुझ पर कड़ाई न करो, मैं सब बातें साफ साफ कह देती हूं।"

कर्नल० । कमबख्त ! तु ऐसी दुष्टा है ! अब मुझ पर सब हाल खुला । मालूम होता है कि अपनी शादी से पहिले जब तू फ्रांस गई, तो सफर का केवल बहाना ही बहाना था । असल में तू अपने लड़के को जनने गई थी, जिसमें यह भेद किसी पर न खुले ।

एमिलिन० । (उसी तरह रोते हुए) बेशक यही बात है । लेकिन ईश्वर के लिए बस करो । इन बातों से मेरा कलेजा फटा जाता है ।

कर्नल० । अब क्यों न कलेजा फटेगा ! दुष्टा ! पिशाचिनी अब भी मुझसे बात बनाती है ? बेहया कहीं की ! जा, मैं जाता हूँ, यह तेरा चाहनेवाला तेरे पास खड़ा है और यह तेरा हरामी लड़का भी मौजूद है जा दूर हो मेरे सामने से ।

यह कहता हुआ वह मुड़ कर चला, लेकिन तुरन्त उसने एमिलिन को कमजोर आवाज से पुकारते सुना, "ओह ! ठहर जाओ । ईश्वर के लिये थोड़ी देर और ठहर जाओ । जब तक इस अपराधिनी का अङ्ग प्रत्यङ्ग ठण्डा न पड़ जाय, जब तक

मेरी आत्मा इस संसार से कूच न कर जाय, तब तक जरा ठहर जाओ।"

कर्नल डार्मन ने मुड़ कर देखा। एमिलिन जमीन पर पड़ी हुई दिखाई दी। उसके काले काले बाल, जो किसी समय सांप की तरह किसी के दिल को डंस लेते थे, इस समय जमीन पर बिखरे हुए थे। वह प्यारी और खूबसूरत सूरत, जो किसी समय देखने वालों का दिल छीन लेती थी, इस समय बिगड़ गई थी। क्या कोई ऐसा दिल है, जो ऐसी हालत देख कर टुकड़े २ न हो जाय? क्या ऐसी आंखें भी हैं जो ऐसी खूबसूरती को मिट्टी में मिलते देख कर बिना आंसू बहाए चैन ले? कभी नहीं।

कर्नल डार्मन, एमिलिन का यह हाल देख कर बेचैन हो गया। उसने कुछ कहना चाहा, परन्तु एमिलिन की धीमी आवाज जो मरने समय भी सुरीली थी, यह कहती हुई सुनाई दी,—

"नहीं, अब तुम कुछ न कहो। हाय! अब दिल में सुनने की ताकत नहीं है। यह हाथ ... ओफ! कसूर से भरा हुआ है (जोर से जमीन पर हाथ पटक कर) हाय! मेरा रोम रोम अपराधी है। इस लिये कठिन दण्ड ... जहन्नुम की आग ... लेकिन यह दिल ... हाय! इस पर किसी का अधिकार नहीं डार्मन! सुनो (लेकिन अब उसकी आवाज उखड़ने लगी) सुनो ... शादी के बाद में तुमको अवश्य प्यार करती थी

उससे पहिले ' मुझसे भूल हुई हाय ईश्वर ! मैंने क्या किया ! अच्छा, अब बाप मा .. मित्र सम्बन्धियों से विदा होती हू लेकिन यह अवश्य कहूगी कि यह आफत मेरे बाप की लाई हुई है मुझ पर बड़ी जबर्दस्ती की गई मैं मनुष्य हू मनुष्य मात्र से भूल होती है मुझसे भी भूल हुई . हाय ! अब मेरी हड्डियां नरक में . जलेंगी ऐ ईश्वर ! दया दया ।।"

' दया का शब्द उसके मुह से निकला ही था कि उसने अपनी आखें बन्द कर लीं और इस ससार में अपने चाहने वालों को सदा के लिये अकेले छोड़ गई ।

कर्नल उसकी बातें सुनता रहा । यद्यपि उसका दिल बहुत कड़ा था, तो भी वह बराबर रोता रहा। वह कुछ और सुनने की उम्मीद करता था लेकिन उसने देखा कि एमिलिन की आखें बन्द हो गई और दो एक हिचकियों के बाद उसकी आवाज़ रुक गई, कर्नल डार्मन का दिल भर आया। वह अपने को रोक न सका और एमिलिन की ओर झुक कर कहने लगा, "प्यारी एमिलिन ! मैं तुम्हारे सब अपराध क्षमा करता हूँ। ईश्वर के लिये आखें खोलो, एक बार बोलो ! एक दफे उस मुहब्बत की निगाह से देख लो। हाय ! कुछ जवाब तो दो। तुम चुप क्यों हो ? अभी तो तुम बातें कर रही थीं, एक बार और बात कर लो। केवल यह एकरार कर लो कि वाल्टर को कभी न देखोगी। इसके सिवाय मैं कुछ नहीं

चाहता। मैं तुम्हारे लड़के को अपने भतीजे की तरह पालूंगा। ईश्वर के लिये अब तो मान जाओ। प्यारी एमिलिन!"

कप्तान की बातें सुन वाल्टर बोला, "अब वह तुम्हारी बात का कभी जवाब न देगी। तुम्हारी झिड़की ने उसका दिल तोड़ दिया और अब उसका अन्त हो गया।"

कर्नल०। (रो कर) हाय! मेरे तीरों ही ने उसका कलेजा टुकड़े टुकड़े कर दिया! अफ़सोस! मैं भी कैसा अभागा हूं! निःसन्देह, उसका अन्त हो गया। हाय! यह घटना मरने तक मेरी आंखों के सामने फिरा करेगी।

कुछ देर बाद वाल्टर अपने लड़के को साथ ले कर वहां से चला गया और कर्नल डार्मोन ने रीत्यानुसार एमिलिनके गाड़ने की तैयारी शुरू की। दूसरे दिन एमिलिन जमीन के नीचे सुला दी गई। उस दिन से कर्नल डार्मोन को चुपकी सी लग गई। उसका दोस्तों और जल्सों में जाना आना एकदम बन्द हो गया और आखिर यह नौबत हुई कि उसी दुःख में घुल घुल कर वह मर गया।

ट्रेसी०। लेकिन आपने यह नहीं कहा कि वाल्टर का क्या हाल हुआ।

सर रिचर्ड०। उसका अब तक कुछ हाल नहीं मालूम हुआ और न कुछ उम्मीद ही है।

सर मा०। यह भी कैसी दर्दनाक घटना थी!!

सर रिचर्ड०। लेकिन साफ बात तो यह है कि बिना मर्द

औरत दोनों के राजी हुए शादी कर दी जाती है उसका यही नतीजा होता है।

यह बात सर रिचर्ड ने कुछ इस तरह जोर दे कर कहा कि सर माइलिज उनकी ओर गौर से देखने लगा कि ऐसा कहने से उसका क्या मतलब है। लेकिन सर रिचर्ड बेपरवाई से दूसरी ओर देख रहे थे जिससे जान पड़ता था कि उन्होंने सर माइलिज के ताज्जुब को नहीं देखा।

जिस समय सर रिचर्ड ने कर्नल डार्मन का किस्सा छेड़ा, उस समय फ्लोरा वहां नहीं थी। वह अपने कमरे में बैठी अपने ध्यान में डूबी हुई थी। सूर्य्य भगवान् अस्त हो रहे थे और बहुत ही धीमी धीमी ठण्डी हवा चल रही थी, लेकिन फ्लोरा का जी बैठा जाता था, वह सन्ध्या हो जाने पर भी अपने कमरे से नहीं निकली।

नौकरों ने खाने के कमरे में पहुंच कर टेबुल को साफ किया, लेकिन शराब उसी तरह रक्खी रही, क्योंकि ट्रूसी अब तक बैठा ग्लास पर ग्लास पी रहा था। उसकी आंखें लाल हो गई थीं और वह बहकी बहकी बातें कर रहा था। यद्यपि सर माइलिज को ट्रूसी की चाल बहुत बुरी मालूम होती थी तो भी उसका देनदार होने के कारण वह उसकी हां में हां मिलाता जाता था! सच है, कर्जदारों की ऐसी ही दशा होती है। फिर भी लोग न समझें तो उनका दुर्भाग्य है।

सन्ध्या हो जाने के कारण सर माइलिज ने सर रिचर्ड से

चल कर बाग की सैर करने को कहा और वह तुरन्त तैयार हो गए। इस समय ट्रेसी बिल्कुल नशे में चूर था। उसने दोनों को जाते देखा तो कहने लगा, "क्या आप बाहर जाते हैं ? तो क्या मैं भी चलूं ? लेकिन अभी तो यहां शराब मौजूद है !!" यह कह कर ट्रेसी ने उठने का उद्योग किया, परन्तु पैर लड़खड़ाने लगे। उसने टेबुल को पकड़ लिया, उसका सिर चकराने लगा। मकान की सब चीजें घूमती हुई मालूम हुई। वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया तथा बैठते ही शराब के नशे में बेहोश हो कर सो गया।

सर माइलिज०। (कुछ लज्जित हो कर) बस, इस समय यही उचित है कि यह सो जाय। कुछ देर में नशा उतर जायगा।

सर माइलिज बड़ा चतुर था। बात को निबाह ले जाना वह खूब जानता था, लेकिन ट्रेसी की बेहूदगी देख सुन कर भी उसने अपने स्वार्थ के लिये फ्लोरा की शादी उसके साथ कर देने का पक्का इरादा ठान लिया था।

दोनों निकल कर बाहर टहलने लगे, परन्तु सर रिचर्ड ने ट्रेसी के बारे में एक बात भी नहीं कही। बड़ी देर तक ये लोग इधर उधर की बातें करते रहे। लौटते समय उन्होंने फ्लोरा के कमरे में जा कर देखा कि यदि ट्रेसी भी वहां हो तो उसको भी साथ में ले लें, परन्तु वह वहां नहीं था। उन्होंने सोचा कि कदाचित् उनसे पहिले ही वह फ्लोरा के कमरे

में चला गया होगा, लेकिन जब फ्लोरा के कमरे में भी न मिला तो उन्होंने समझा कि शायद नौकरों ने उठा कर किसी दूसरे कमरे में पहुंचा दिया होगा, ताकि वहां आराम कर सके। अस्तु उन्होंने ज्यादा खोज ढूंढ नहीं की और दोनों जा कर फ्लोरा के कमरे में बैठ गए। सर माइलिज ने फ्लोरा से बाजे पर दो एक चीजें बजाने को कहा। उसने वैसा ही किया, जिसको सुन कर सर रिचर्ड बहुत प्रसन्न हुए। वह एक इसी चहल पहल में कट गया और फ्लोरा को मौका नहीं मिला कि वह भील की तरफ वाले कमरे में जा कर हुबर्ट को एक नजर देख लेती।

अब हमें यह देखना है कि ट्रेसी कहां गायब हो गया। सर माइलिज वगैरह के चले जाने के बाद उसको असल में नींद नहीं आई, बल्कि वह केवल नशे की बेहोशी थी। थोड़ी देर में वह होशियार हुआ और इधर उधर देख कर कहने लगा, "हैं! ये लोग कहां चल दिये। हां, अब मैं समझा, शायद गर्मी चढ़ गई होगी, हवा खाने गए होंगे। तो क्या मैं भी चलूं! लेकिन मैं अभी क्यों जाऊं, अभी तो शराब बाकी है। हां तो बस (शराब पी और डकार ले कर) अरे! शराब खतम हो गई! खैर!"

ट्रेसी इस समय बहुत ज्यादा शराब पी गया था। उसने सोचा कि अब बाहर हवा में टहलना चाहिये। कुर्सी से उठते उठते दो तीन लम्प जो टेबुल पर जलते थे, उनमें ठेस लगी और वे गिर कर टूट गए। अब कमरे में बिल्कुल अन्धेरा हो

गया। इतना कुशल हुआ कि आग नहीं लगी। टूसी दीवार टटोलता हुआ एक दर्वाजे के पास पहुँचा। दर्वाजा खोलने पर उसे सीढ़ियों का सिलसिला मिला। वह सम्हल सम्हल कर उतरने लगा, परन्तु उसको यह नहीं मालूम था कि वह कहां जा रहा है और ये सीढ़िया कहां को गई हैं। वह आप ही आप कहने लगा, "ओह! कैसी अन्धेरी रात है! यह तो मानो कोई गुफा है। मैं जा कहा रहा हूं? ये सीढ़ियां खतम होंगी या नहीं? मैं नहीं समझता था कि ये इतनी दूर चली गई होंगी। क्या करू चिल्लाऊ? नहीं यह ठीक नहीं। अच्छा तो फिर कुछ गाऊ? हा हा, (गाता है)

"ले लो पी लो अंगूरी शराब यार साकिया।
ह्विस्की भी पी लो, ब्रेण्डी भी पी लो,पी लो अगूर।"

अरे—रे—मै किधर आ निकला! खैर, चले भी चलो देखा जायगा। अब कुछ हवा आ रही है। हां थोड़ी थोड़ी रोशनी भी दिखाई देती है। तो क्या चांद निकल रहा है? अरे? कितना बड़ा है। जैसे कुम्हार की चाक या धोबी का पाट।

पाठकों को याद होगा कि किले के पीछे एक सीढ़ियों का सिलसिला झील के किनारे तक चला गया था, जहा दो एक डोंगिया वहीं रहती थीं, इन्हीं सीढ़ियों से टूसी इस समय जा रहा था। ये सीढ़िया जिस जगह पर खतम हुई थी, वहा झील का एक मुहाना आ कर मिल गया था, उसके पानी के

अपस पर जो उसकी निगाह पड़ी, तो नशे में उसने समझा कि मानो चाद निकल रहा है।

जब वह झील के बिल्कुल पास पहुंच गया तो उसको मालूम हुआ कि वह अपना रास्ता भूल गया है। थोड़ी दूर जा कर उसे एक तग रास्ता मिला, जिसको तै करने के बाद वह एक चट्टान के टुकड़े पर बैठ गया। यह भी कुशल ही हुआ, नहीं तो अगर वह एक कदम भी बढ़ता तो झील में गिर पड़ता। वह बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये? लेकिन कुछ समझ में न आया और वह वहीं बैठा रहा। नशे का खुमार जब कुछ कम हुआ तो उसको नींद आने लगी। थोड़ी देर बाद उसे जान पड़ा कि कोई डोंगी बड़ी तेजी से बहती हुई इधर ही चली आती है। पर टूनी ने उस तरफ कुछ ध्यान न दिया और वहीं लेट कर सो गया।

इसी समय हूबर्ट अपने घर से निकल कर अपनी डोंगी पर सवार हुआ और रात अन्धेरी होने के कारण वह अपनी नाव को किले के बहुत ही पास ले आया तथा इस उम्मीद पर इधर उधर फिरने लगा कि शायद फ्लोरा की एक झलक देख सके। उसने देखा कि एक नाव पर से दो आदमी बड़ी तेजी से किले की तरफ जा रहे हैं। उसने पुकार कर पूछा, "कौन जाता है?" उसमें से एक आदमी ने कहा, "अहा मास्टर हूबर्ट! तुम यहां कहां?" अब हूबर्ट ने देखा कि वे दोनों मछली वाले हैं जिन्हें वह खूब जानता था।

ह्यर्ट०। कुछ नहीं, यों ही निकल आया और तुम कहा जाते हो ?

मछलीवाले०। हम लोगों ने आज कुछ मछलियां पकडी हैं, उनको किले में पहुचाने जाते हैं, सुना है वहां आज कुछ जरूरत है ॥

ये तो यहां बातों में लगे हैं, लेकिन अब जरा हम देखें कि ट्रेसी टिलबर्न का जो झील किनारे सो रहा था क्या हाल हुआ। जिस समय वह सो गया, उस समय उसे एक विलक्षण स्वप्न दिखाई दिया। उसने देखा कि अंधियारी, जो चारों ओर से छाई हुई थी, दूर हो गई और जमीन में से एक रोशनी पैदा हुई जो ऐसी साफ थी जैसे चांद की रोशनी और यह रोशनी तमाम झील पर फैल गई। फिर उसने देखा कि झील से कुछ धुआं पैदा हुआ जो झील के पानी पर तैरने लगा। थोडी देर में उस धुएं में एक तरह की चमक पैदा हुई और उसी में से बहुत सी छोटी बडी चमकदार पुतलियां निकल कर किले के पास आ गईं। ट्रेसी को सोते देख कर उनमें से एक पुतली जोर से हस पडी। यह देख ट्रेसी को बहुत डर मालूम हुआ। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उठा न गया। उसको जान पडा कि उसके हाथ पाँव बिल्कुल बेदम हो गए हैं। उन पुतलियों ने अपनी चमकदार आखों से ट्रेसी की तरफ इशारा किया और उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "देखो तो कैसा ढीठ है' उठता भी नहीं ॥"

दूसरी० । सब मिल कर मारो बदमाश को ॥

ट्रेसी ने देखा कि सब पुतलियां उसको चारो ओर से घेर कर खडी हो गईं । एक ने नाक पकडी, दूसरी ने कान, तीसरी ने टांग, चौथी ने गर्दन और पांचवीं उसको पैरों से ठुकराने लगी । दो तीन मिल कर उसकी लाल सदरी को फाडने लगीं, तब वह चिल्लाया, "हाय ! मेरी सदरी गई !"

वह सोते ही में लाख चीखा चिल्लाया, लेकिन कुछ भी असर न हुआ । अब उसको जान पडा कि मानों उन पुतलियों ने उसको उठाया और एक ओर ले चलीं । उसने सोते में उनसे पूछा, "तुम मुझको कहा ले जाती हो ?" लेकिन उन्होंने कुछ जवाब न दिया बल्कि जोर से हंस पडीं । डर के मारे ट्रेसी का बदन थर्राने लगा । उसके बाद मानो वह बेहोश हो गया और फिर क्या हाल हुआ, सो न जान सका ॥

जिस समय उसकी आख खुली, उसने देखा कि चांद निकल आया और तारे खिले हुए हैं । उसे उस समय कुछ सर्दी मालूम हुई । सो क्यों ? अर्रर यह क्या हुआ उसके कपडे पानी में बिल्कुल तर थे । ऐसा जान पडता था कि मानो वह झील में गिर पडा लेकिन यह और ताज्जुब की बात है कि उसकी लाल सदरी सचमुच टुकडे टुकडे हो गई थी । ट्रेसी पागल की तरह चारों ओर देख रहा था, वास्तव में बात क्या थी ? वह इस समय कहा था ? जब उसकी होश ठिकाने हुई तो उसने उस जगह को गौर से देखा । यह वह

जगह न थी, जहां वह सोया था। उसने आंख मल कर खुमारी को दूर किया और चारों ओर देखा। किले की इमारत झील के दूसरी तरफ कुछ धुंधली सी दिखाई देती थी। आज पूर्णमासी होने के कारण चांदनी साफ थी, इस लिये किले की इमारत इतनी भी दिखाई दी, नहीं तो कदापि दीख न पडती। टूसी ने पीछे फिर कर देखा, उसको एक टट्टी दिखाई दी जिस पर उसको एक टूटा सा छप्पर नजर आया। अब उसको मालूम हुआ कि वह एक मछली वाले के झोपडे में बैठा हुआ है॥

वह बडे ताज्जुब में था कि यह क्या हुआ। उसको स्वप्न की सब बातें याद आ गईं। क्या यह सम्भव था कि उसको पुतलियों ने उठा कर झील के दूसरी तरफ पहुंचा दिया और रास्ते में पानी में वे गोते खिलाती गईं? उसने हजार कोशिश की लेकिन कोई बात समझ में न आई॥

वह उस जगह से उठ कर उस सराय में पहुँचा जो मछली वालों के कसबे में थी और वहीं सो रहा। सुबह को जब वह सो कर उठा तो उसको रात की बात याद आई और उसके बदन में कुछ दर्द मालूम हुआ लेकिन इससे ज्यादा कुछ समझ में न आया कि नशे की हालत में वह कहीं गिर पडा होगा। पाठक! देखो आप ने शराबी की दुर्दशा?

अस्तु इसी जगह से उसने एक चीठी सरमाइलिज को लिखी कि रात को जब वह किले से निकला तो रास्ता भूल

गया था और लाचार हो सराय में सो रहा था। उसने यह भी लिख दिया कि उसकी तबियत कुछ खराब है और इस समय वह अपने घर जा रहा है॥

आज बृहस्पतिवार था। शुक्रवार भी बीत गया। शनिवार को सुबह के वक्त सरमाइलिज को ट्रेसी की एक चीठी मिली। उसमें उसने लिखा था कि वह ठीक साढे सात बजे किले में पहुँच जायगा क्योंकि आठ बजे विवाह की रीति भांति होने वाली थी॥



सातवां बयान

आज ही रात को आठ बजे फ्लोरा की शादी होने वाली है, आज ट्रेसी प्रसन्न होगा और आज ही सरमाइलिज भी फ्लोरा को उसके हाथ सौंप कर अपना छुटकारा करावेगा, यही सोच कर वह भी हर्षित है, परन्तु अभागिनी फ्लोरा! क्या तू भी खुश है? क्या तू भी भविष्यत् की बात सोच कर ट्रेसी की तरह आनन्दित हो रही है? नहीं नहीं, परन्तु सुन्दरी फ्लोरा! यह तुमको क्या हो गया। प्रसन्न के बदले तू उदास क्यों है? तेरी वे उम्मीदें जो बढती ही जाती थीं, आज क्या हुई? फ्लोरा! बता कि आज तू हर्बर्ट की याद भी क्यों भूल गई? अरी तू बोलती क्यों नहीं, चुप क्यों है? हा! आज फ्लोरा को कोई देखे। अब न उसके चेहरे पर वह चमक दमक है, न उसकी आंखों में रसीलापन, न उसके होंठों पर

पहिले सी मुस्कुराहट है, न उसका चित्त शान्त है ! आज वह अपने बाप को खुश रखने के लिये अपनी हरी हरी उम्मीदों को भी तोड़ देने के लिये तैयार है, वह आज अपने बाप के लिए अपने प्यारे हूवर्ट को भूल कर जान तक दे देने के लिये तैयार है। धन्य फ्लोरा ! धन्य तेरी पितृ भक्ति ! भली लड़कियों को यही चाहिये कि वे अपने मां बाप की आज्ञा मानें, उनके लिये तकलीफ उठावें, उनको खुश रखने की चेष्टा करें। फ्लोरा ! तुझमें ये सब बातें मौजूद हैं। सचमुच तू पिता पर बड़ी भक्ति रखती है, सचमुच तू बड़ी सुशीला और नेक है॥

पाठको प्रेम का यही नियम है कि वह आप ही दो दिलों में उपज कर उन दोनों को एक दूसरे पर आसक्त कर देता है। इसमें उन प्रेमियों का कोई दोष नहीं है। प्रेम के उसी नियम के अनुसार फ्लोरा और हूवर्ट एक दूसरे को प्यार करने लगे थे। दोनों ही के दिलों में सच्ची मुहब्बत थी, दोनों ही एक दूसरे के लिये जान तक देने के लिये मुस्तैद रहते थे। इस लिये हम फ्लोरा पर यह दोष नहीं लगा सकते कि वह हूवर्ट से छिप छिप कर मिलने के कारण व्यभिचारिणी कहलाने योग्य थी. क्योंकि मुहब्बत का दस्तूर ही ऐसा है... हाल वे ही लोग जान सकते हैं जिनके दिलों... थोड़ी सी भी बू मौजूद होगी, खैर।

फ्लोरा आज बहुत बेचैन है, तो भी वह ...गाज नहीं किया चाहती है। उसकी ...

बात तो बहुत लोग जानते थे कि ट्रेसी के साथ होने वाली है, परन्तु यह बात किसी को भी नहीं मालूम थी कि वह इतनी जल्दी हो जायगी। यही सबब था कि हूबर्ट को अब तक यह नहीं मालूम हुआ कि वह समय कब आने वाला है जब उसकी सब उम्मीदें एक बार ही मिट्टी में मिल जायेंगी॥

इस दो तीन दिन की मुद्दत में जब से फ्लोरा से आखिरी बार हुबर्ट मिला था वह दिन भर देखा करता था कि शायद कोई फूल या उसी तरह की और कोई चीज निशानी के लिये, फ्लोरा भील में फेंक देगी और वह उसको उठा कर अपनी आंखों से लगायेगा। वह इसी लिये अपनी डोंगी में सवार हो कर पहरों इधर उधर फिरा करता था और प्रायः अपनी दूरबीन लगा कर देखा करता था कि शायद फ्लोरा अपने कमरे की खिड़की में कोई गुलदस्ता रख दे और वह उससे मिलने को तैयार हो जाय, लेकिन इन सब बातों में से कोई बात भी नहीं हुई। तब वह क्या समझता ? क्या उसकी मुहब्बत फ्लोरा के दिल से कम होती जाती है ? या वह कुछ बीमार है कि खिड़की तक पहुंच नहीं सकती ? हुबर्ट ने हजार बार गौर किया कि क्या बात है लेकिन वह यही नतीजा निकाल सका कि शायद सररिचर्ड के कारण फ्लोरा को कोई काम करने की हिम्मत न होती होगी कि कहीं यह भेद खुल

पहिले सी मुस्कुराहट है, न उसका चित्त शान्त है। आज वह अपने बाप को खुश रखने के लिये अपनी हरी हरी उम्मीदों को भी तोड़ देने के लिये तैयार है, वह आज अपने बाप के लिए अपने प्यारे हूवर्ट को भूल कर जान तक दे देने के लिये तैयार है। धन्य फ्लोरा! धन्य तेरी पितृ भक्ति! भली लड़कियों को यही चाहिये कि वे अपने मां बाप की आज्ञा मानें, उनके लिये तकलीफ उठावें, उनको खुश रखने की चेष्टा करें। फ्लोरा! तुझमें ये सब बातें मौजूद हैं। सचमुच तू पिता पर बड़ी भक्ति रखती है, सचमुच तू बडी सुशीला और नेक है॥

पाठको प्रेम का यही नियम है कि वह आप ही दो दिलों में उपज कर उन दोनों को एक दूसरे पर आसक्त कर देता है। इनमें उन प्रेमियों का कोई दोष नहीं है। प्रेम के उसी नियम के अनुसार फ्लोरा और हूवर्ट एक दूसरे को प्यार करने लगे थे। दोनों ही के दिलों में सच्ची मुहब्बत थी, दोनों ही एक दूसरे के लिये जान तक देने के लिये मुस्तैद रहते थे। इस लिये हम फ्लोरा पर यह दोष नहीं लगा सकते कि वह हूवर्ट से छिप छिप कर मिलने के कारण व्यभिचारिणी कहलाने योग्य थी क्योंकि मुहब्बत का दस्तूर ही ऐसा है इसका पूरा २ हाल वे ही लोग जान सकते हैं जिनके दिलों में मुहब्बत की थोडी सी भी बू मौजूद होगी, खैर।

फ्लोरा आज बहुत बेचैन है, तो भी वह अपने बाप को नाराज नहीं किया चाहती है। उसकी शादी के बारे में यह

बात तो बहुत लोग जानते थे कि टूसी के साथ होने वाली है, परन्तु यह बात किसी को भी नहीं मालूम थी कि यह इतनी जल्दी हो जायगी। यही सबब था कि ह्यूबर्ट को अब तक यह नहीं मालूम हुआ कि वह समय कब आने वाला है जब उसकी सब उम्मीदें एक बार ही मिट्टी में मिल जायगी॥

इस दो तीन दिन की मुद्दत में जब से फ्लोरा से आखिरी बार हूबर्ट मिला था वह दिन भर देखा करता था कि शायद कोई फूल या उसी तरह की और कोई चीज निशानी के लिये, फ्लोरा झील में फेंक देगी और वह उसको उठा कर अपनी आखों से लगावेगा। वह इसी लिये अपनी डोंगी में सवार हो कर पहरों इधर उधर फिरा करता था और प्रायः अपनी दूरबीन लगा कर देखा करता था कि शायद फ्लोरा अपने कमरे की खिड़की में कोई गुलदस्ता रख दे और वह उससे मिलने को तैयार हो जाय, लेकिन इन सब बातों में से कोई बात भी नहीं हुई। तब वह क्या समझता? क्या उसकी मुहब्बत फ्लोरा के दिल से कम होती जाती है? या वह [illegible] बीमार है कि खिड़की तक पहुंच नहीं सकती? हूबर्ट ने [illegible] बार गौर किया कि क्या बात है लेकिन वह यही नतीजा निकाल सका कि शायद सररिचर्ड के कारण फ्लोरा को कोई काम करने की हिम्मत न होती होगी कि [illegible] न जाय।

खास कर फ्लोरा के लिये यह शाम, बहुत ही बेचैन कर देने वाली थी। ठण्डी २ हवा के हल्के झोंके जो उसको प्रसन्न करते थे, आज उसके शरीर को झुलसाए देते हैं। चञ्चल चिड़ियां मानों उससे यह कह रही हैं कि "अरी फ्लोरा! जा अब दुनिया में तेरा काम नहीं है।" यदि वह आसमान की की तरफ देखती है, तो दो चार तारे जो अब तक खिल आए थे उसको आग की चिनगारियां मालूम होते हैं। आह! जमीन, आसमान, जल, थल, कहीं पर भी कोई फ्लोरा के दुखे हुए दिल को खुश करने वाला दिखाई नहीं देता!!

एक तो योंही अँधियारी झुकी हुई थी, दूसरे काले काले बादलों ने चारों ओर से घिर कर उस रोशनी को भी गायब कर दिया जो बेचारे तारों से थोड़ी बहुत आती थी। अब सिवाय अँधियारी के कुछ नहीं दिखाई देता, परन्तु ऐसे समय भी हूवर्ट को चैन न पड़ा। वह अपनी डोंगी पर सवार हो किले से कुछ दूर पर इधर उधर फिरने लगा, परन्तु जब वह फ्लोरा के कमरे की ओर देखता था तो सिवाय उस धुँधली रोशनी के, जो खिड़कियों की दर्जों से छन छन कर आती थी, कुछ नहीं दिखाई देता था। खैर, अब हूवर्ट को तो यहीं छोड़ना चाहिये और देखना चाहिये कि किले में क्या हो रहा है।

ठीक साढे सात बजे ट्रेसी किले में पहुंच गया। आज उसके कपड़े बहुत ही चमकीले और बहुमूल्य थे और वह बहुत प्रसन्न जान पड़ता था। आज से ज़ियादा उसके हर्ष का

कौन दिन हो सकता था जब उसके हाथ में फ्लोरा का कोमल हाथ पकड़ा दिया जायगा ! इसी खयाल से वह खुश है, लेकिन साथ ही आज उसकी बेददी भी खूब बढी चढी है।

जिस समय वह किले में पहुचा, उस समय दो नौकर भडकीले वस्त्र पहिने हुए उसके साथ थे, जिसमें से एक के हाथ में ट्रूसी की जरूरी चीजें थीं, और दूसरे के हाथ में एक सन्दूक था, जिसमें मजबूत और खूबसूरत ताला लगा हुआ था थोड़ी देर में पादरी भी पहुच गया और इसके कुछ देर बाद फ्लोरा ने अपनी लोंडी को बुलवा रोनी आवाज में उससे शादी के कपडे पहनाने को कहा।

जिस समय फ्लोरा विवाह के कपडे पहिन रही थी, उसकी लोंडी उसके चेहरे को ध्यान से देखती जाती थी कि देखें फ्लोरा प्रसन्न है या नहीं, परन्तु फ्लोरा के चेहरे पर हर्ष का कोई चिन्ह उसको न मिला।

जब ट्रूसी किले में आया, तो सरमाइलिज के नौकरों ने उसे उस कमरे पहुचा दिया जो झील के बिल्कुल ऊपर था, और जो आज खूब सजा हुआ था। ट्रूसी के नौकर ने वह सन्दूक टेबुल पर रख दिया और बाहर चला गया। यहा सर-माइलिज और सररिचर्ड मौजूद थे। ट्रूसी ने आगे बढ कर सलाम किया, परन्तु सररिचर्ड सलाम का जवाब देकर तुरन्त बाहर चले गये। उस समय सररिचर्ड के चेहरे से मालूम होता था कि वह बहुत घबराए हुए हैं।

फिर दस मिनट हो गए, परन्तु विवाह पत्र अब भी खतम नहीं हुआ, तब तो सरमाइलिज ने घबरा कर पूछा,"क्यों भाई मैं भी सुनूं, तुम देख क्या रहे हो ?"

सर रि० कुछ नहीं, मैं एक चीज देख रहा था । लो, बस देख चुका ।

यह कह कर उन्होंने विवाह पत्र लौटा दिया । ठीक समय से आध घंटा ज्यादा बीत गया था, परन्तु विलमट अभी तक वापस न आया । फ्लोरा बुलाई गई और थोडी देर के बाद वह वहां पहुंच गई ।

इस वक्त फ्लोरा के चेहरे पर खुशी है न प्रसन्नता, न दुःख है न रंज, न नाउम्मीदी है न डर,तब हम अपने पाठकों को क्या बतलावें कि इस समय उसके चेहरे की रंगत कैसी है । खैर, इतना बता देते हैं कि इस समय उसके चेहरे पर बडी गम्भीरता छाई हुई थी । जिस वक्त वह उस कमरे में आई, उस समय उसके साथ कोई लौंडी नहीं थी । उसके आते ही टॉमी अपनी जगह से अगवानी के लिये उठा । पास पहुंच कर उसने फ्लोरा का कोमल हाथ चूम लेना चाहा, लेकिन उसने तुरन्त अपना हाथ खींच लिया । सरमाइलिज ने कहा, "मैं समझता हू कि अब बिलकुल देर न करनी चाहिये । अच्छा पादरी साहब "

सर रि० । लेकिन सुनो तो सही, तुम्हें कुछ यह भी



सर माइलिज ने कहा, "मै समझता हूं कि अब बिलकुल देर न करनी चाहिये। अच्छा पादरी साहब'

(पृष्ठ ११८)

फिर दस मिनट हो गए, परन्तु विवाह पत्र अब भी खतम नहीं हुआ, तब तो सरमाइलिज ने घबरा कर पूछा, "क्यों भाई मैं भी सुनूं, तुम देख क्या रहे हो ?"

सर रि० कुछ नहीं, मैं एक चीज देख रहा था । लो, बस देख चुका।

यह कह कर उन्होंने विवाह पत्र लौटा दिया। ठीक समय से आध घंटा ज्यादा बीत गया था, परन्तु विल्मट अभी तक वापस न आया। फ्लोरा बुलाई गई और थोडी देर के बाद वह वहां पहुंच गई।

इस वक्त फ्लोरा के चेहरे पर खुशी है न प्रसन्नता, न दुःख है न रंज, न नाउम्मीदी है न डर, तब हम अपने पाठकों को क्या बतलावें कि इस समय उसके चेहरे की रंगत कैसी है। खैर, इतना बता देते हैं कि इस समय उसके चेहरे पर बड़ी गम्भीरता छाई हुई थी। जिस वक्त वह उस कमरे में आई, उस समय उसके साथ कोई लौंडी नहीं थी। उसके आते ही टॉमी अपनी जगह से अगवानी के लिये उठा। पास पहुंच कर उसने फ्लोरा का कोमल हाथ चूम लेना चाहा, लेकिन उसने तुरन्त अपना हाथ खींच लिया। सरमाइलिज ने कहा, "मैं समझता हूं कि अब बिल्कुल देर न करनी चाहिये। अच्छा पादरी साहब "

सर रि०। लेकिन सुनो तो सही, तुम्हें कुछ यह भी

मालूम है कि विवाह के पहिले कुछ और कार्रवाई होनी चाहिये ?

ट्रेसी० । (झुंझला कर) उह ! आप भी क्या ही आदमी हैं । अच्छा वह भी कह डालिये, क्या कार्रवाई करनी है ?

सर दि० मेरा मतलब उस सन्दूक से है जो तुम्हारे पास टेबुल पर रक्खा है ।

ट्रेसी० । (जल्दी से) हां, वह सन्दूक ! उसको तो मैं भूल ही गया था । उसमें कुछ कागज पत्र और दस्तावेजें हैं जो आज सरमाइलिज के हवाले कर दी जायंगी, लेकिन अगर आप यह चाहते हैं कि उनका फैसला भी अभी हो जाय तो यह भी सही ।

यह कह कर ट्रेसी आगे बढ़ा और टेबुल पर रक्खे हुए सन्दूकचे का ताला खोल कर उसने तख्ता उठा दिया ।

सर दि० । बात तो यह है कि तुम्हारी तरह दिल के साफ आदमी मुश्किल से मिलते हैं, लेकिन मेरे कहने का बुरा न मानना, तुम अभी यह नहीं जानते कि दुलहे को यह चाहिये कि विवाह के पहिले वह अपनी सब दौलत बीबी के पांवों पर रख दे । यह इस बात का प्रमाण है कि वह धन दौलत की अपेक्षा बीबी को ज्यादा चाहता है ।

ट्रेसी० । मैं अभी तक समझा ही नहीं कि इससे आप का मतलब क्या है !

सरॅरि० । भैया । अभी तुम बच्चे हो, धीरे धीरे सब कुछ समझोगे । मान लो कि तुम छोटे थे तो कैसी पोशाक पहिनते थे, अब उसी को देख लो कि कैसी बांकी है ।

ट्रॅमी० । (मूछों पर हाथ फेर कर) और बात भी असल में यही है कि सब पोशाकों से उसी पोशाक को मैं अच्छा समझता हू जिसमें बांकापन हो ।

सर रि० । (बात बनाकर) हां क्यों नहीं, अच्छा तो फिर उन दस्तावेजों को निकालो ।

ट्रॅमी० । दस्तावेजों को ? अच्छा लीजिये (कागजों का एक मुट्ठा निकाल कर) ये सब रेहननामे हैं; इस में उस जायदाद की सूची है, जिसको किसी जमाने में सरमाइलिज ने रेहन रक्खा था ।

सर रि० । अच्छा तो इनको फाड फूड कर फेंक दो । ऐसी चीजों को रखना न चाहिये ।

सर माइलिज० । हां यही उचित है (ट्रॅमी से) तुम को मुझ पर भरोसा करना चाहिये, क्योंकि जो वादा मैंने तुमसे किया था उसको पूरा करने को मैं तैयार हूँ ।

पादरी० बेशक भले आदमियों को यही चाहिये ।

ट्रॅमी० । अच्छा तो फिर इसका फैसला ही हो जाय । मैं तो चाहता था कि शादी के बाद इन सब कागजों को दू, लेकिन आप लोग चाहते हैं तो यही सही । (पादरी से) परन्तु

मैं आपको गवाह करता हूं, जिसमें पीछे किसी तरह का सन्देह न रह जाय।

पादरी०। जी हां, मैं गवाह हूं, आप अपना काम शुरू करें।

इसके बाद ट्रूसी ने सन्दूकचे में हाथ डाल कर दस्तावेजों को निकालना आरम्भ किया और सरमाइलिज को देने लगा। सरमाइलिज ने यह समझा कि सर रिचर्ड ने ट्रूसी को बातों में लगा कर कागजों के लेने का अच्छा ढङ्ग निकाला है। यद्यपि वह सररिचर्ड का असल मतलब अभी तक न समझा था, परन्तु उसने सोचा कि शायद वह ट्रूसी से सब कागज पत्र लेकर उसको धता बताना चाहता है। सरमाइलिज स्वार्थी आदमी था और स्वार्थी लोग यदि ऐसी बात सोचें तो कोई ताज्जुब नहीं है।

ट्रूसी टिलवर्न कागजों को सरमाइलिज के हवाले करता जाता था और वह उन्हें देख देख कर अपने हाथ से फाड़ता जाता था। जब तक यह कार्रवाई होती रही ट्रूसी सररिचर्ड की तरफ जांचने वाली निगाह से देखता रहा कि कहीं ये लोग दगाबाजी तो नहीं करना चाहते, परन्तु उसने सररिचर्ड के चेहरे पर सन्देह करने लायक कोई बात नहीं पाई, बल्कि उस समय उनका चेहरा बहुत ही गम्भीर था। जान पड़ता था कि वह किसी खास बात पर गौर कर रहे हैं। जब सब दस्तावेजें फट चुकीं तो ट्रूसी कुछ घबराहट के साथ कहने लगा,

"अब तो कुछ कसर नहीं है, अब शादी हो जानी चाहिए।"

पादरी। हां और क्या, अब तो बहुत देर होती है।

कागजों के फट जाने से सरमाइलिज के सिर पर से मानों एक भारी बोझ उतर गया और उसने सररिचर्ड की ओर इस मतलब से देखा कि देखें अब उनका क्या इरादा है, लेकिन सररिचर्ड बिल्कुल चुपचाप थे, क्योंकि अब वह कर ही क्या सकते थे, वक्त टालने के लिये जितने बहाने थे, वे सब पूरे हो चुके थे।

जिस समय दस्तावेजें फाड़ी जा रही थीं, फ्लोरा सररिचर्ड की ओर आश्चर्य से देख रही थी, उसको ताज्जुब था कि सररिचर्ड जो ट्रेसी से घृणा करते थे वह उससे मीठी बातें क्यों कर रहे हैं। उसने सोचा कि शायद सररिचर्ड उसके बचाने की फिक्र कर रहे हैं। यह सोचते ही उसकी टूटी हुई उम्मीदें फिर से बँध गईं, लेकिन एक ही मिनट में वह फिर हताश हो गई जब उसने देखा कि सररिचर्ड अब बिल्कुल चुप हैं और उसके छुटकारे का कोई उपाय नहीं है। उसका सिर चकराने लगा और हाथ पैर में सनसनाहट होने लगी, जान पड़ा कि मानो उसके पैर लड़खड़ा रहे हैं। वह सम्हल कर खिड़की की तरफ देखने लगी।

यकायक उसने देखा कि झील में कुछ रोशनी हो रही है। वह समझ गई कि यह रोशनी हूबर्ट की डोंगी में से आ रही है। आह! वह इस समय फ्लोरा को देखने के लिये इधर उधर

घूम रहा था। उस वक्त फ्लोरा का जी ठिकाने नहीं था परन्तु उसने अपने को बहुत सम्हाला और धीरे धीरे आप ही आप कहने लगी, "नहीं यह नहीं होगा। प्यारे .. उफ! क्या नाम लूं . .हाय! अब नहीं मिलेंगे!"

वह यह कह ही रही थी कि उसने अपने बाप की आवाज सुनी,—"फ्लोरा! आओ, अब देर न करनी चाहिये।" यह मालूम हुआ कि मानो उसके कलेजे में तीर लगा! उसने अपने चेहरे का कपड़ा उलट दिया। हाय! यह वह समय था कि हम उसके चेहरे पर खुशी की लालिमा देखते, लेकिन नहीं, इस समय उसका चेहरा पीला था।

जिस समय वह अपनी जगह पर आ कर खड़ी हुई पादरी ने कहा, "तो अब मैं अपना काम शुरू करता हूं।"

फ्लोरा०। जरा और ठहर जाइये, मैं कुछ पूछ लूं। (सर-माइलिज से) पिता जी! मुझे केवल एक बात बता दीजिये कि अब तो आपको ट्रेसी से किसी बात का डर नहीं है न?

सर मा०। हां, अब तो सब काम पूरे हो चुके।

पादरी०। (फ्लोरा से) अब जो कुछ बाकी है वह यही है जिसको तुम अभी पूरा करने वाली हो।

फ्लोरा०। लेकिन मैं पूछती हूं कि क्या इसके पूरा करने का मुझे अख्तियार है?

सर मा०। फ्लोरा! तुम कैसी बातें कर रही हो! —

फ्लोरा०। (सब लोगों की ओर देख कर बहुत ही नम

ओर रोनी आवाज में) सुनिये मैं आप सब लोगों से कहती हूं। आह! आप लोग अच्छी तरह मेरी बातों को सुन लें। यह मैं नहीं कह सकती कि मैं क्यों इसपर इतना जोर दे रही हू आप लोग स्वयं समझ जायँगे। (आखों में आंसू भरे हुए) सुनिये; मैं क्यों यह शादी करने को राजी हो गई। इसका केवल यह कारण था कि मैं अपने बाप का उस होने वाली खराबी से बचाना चाहती थी। मैंने कसम खा ली थी कि मैं टूसी की स्त्री बन कर कभी जीती न रहूगी, परन्तु मैंने यह भी निश्चय कर लिया था कि अपने बाप की इज्जत अवश्य ही बचाऊगी। मैंने यहा तक सकल्प कर लिया था कि अगर दस्तावेज मेरे बाप को न मिली तो मैं टूसी से विवाह भी कर लू गी, यद्यपि उसके बाद मैं वही कर डालती जो इस समय करने वाली हू अर्थात् अपनी जान दे देती। (रुक कर) अब मुझे बडा हर्ष है कि लाख लाख मुसीबतें झेल कर मैंने वह काम पूरा कर दिया, जिसे मैं अपना धर्म समझती थी।"

उसी समय झील की ओर से जोर से आवाज आई, "वह मारा" यह आवाज कमरे भर में गूज उठी, लेकिन साथ ही फलोरा के मुह से एक चीख निकली, वह बेतहाशा खिडकी की ओर झपटी और एक दम झील में कूद पडी—

सब लोग चिल्ला कर बोल उठे, "अरे यह क्या हुआ!"

मगर सररिचर्ड ने कहा, "यह बात का वक्त नहीं है जल्दी दौडो। वह लम्प . जल्दी लाओ।"

यह कह कर सररिचर्ड ने लम्प उठाया और खिड़की की ओर झपटे। उन्होंने बाहर झांक कर देखा, परन्तु इतनी ऊंचाई से वह क्या कर सकते थे। वह मुंह निकाल कर चारों ओर देखने लगे। सब तरफ अंधियारी झुकी हुई थी और भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। यह देख वे अफसोस के साथ अपने हाथ मलने लगे, लेकिन नहीं, तुरन्त ही किसी डोंगी के डांडों की आवाज सुनाई दी जो बड़ी तेजी से किले की ओर आ रही थी। सररिचर्ड ने पुकार कर कहा, "डोंगी पर कौन सवार है! अरे भाई जल्दी बढ़ाओ और देखो झील में कौन डूब रहा है!"

नरमाहलीज तो एक एक कुर्सी पर गिर पड़ा, मगर सर-रिचर्ड ने कहा, "चलो चलो जल्दी चलो, हम भी अपनी एक डोंगी ले चलें। ओफ! अनर्थ हो गया!"

सररिचर्ड झपट कर चले। कमरे से निकलते ही उनको विल्सन मिला, जो दौड़ने के कारण जोर जोर से हांफ रहा था उसने एक मुहर किया हुआ लिफाफा जल्दी से सररि-चर्ड के हाथ में दे दिया।

विल्सन०। हुजूर! क्या सब मेहनत मिट्टी में मिल गई?

सर रि०। हां सब चौपट हो गई, लेकिन तुम जल्दी मेरे साथ आओ। दो आदमी और ले लो, मगर बहुत जल्द चलो, मैं चलता हूं।

यह कह कर सररिचर्ड आगे बढ़े और झील के किनारे

पहुच कर एक डोंगी खोल ही रहे थे कि इतने में उनके कानों में यह आवाज सुनाई दी, "हाय प्यारी फ्लोरा ! यह तुमने क्या कर डाला !!"

सर रि० । (पुकार कर) कौन ! ह्यूबर्ट ?

यह कह कर उन्होंने लम्प को ऊँचा किया जिससे उसकी रोशनी दूर तक फैल गई । उन्होंने देखा कि एक डोंगी पर ह्यूबर्ट सवार है, एक हाथ से वह नाव खे रहा है और दूसरे हाथ के सहारे किसी को अपनी गोद में लिए हुए है जिसके पैर तो नीचे लटके हुए हैं और सिर के लम्बे बाल गालों और मोंढों से चिमट गए हैं । उसके कपडे बिल्कुल भींगे हुए हैं और इस लिये कि उसको एक हाथ से सम्हालने में कठिनाई होती है, ह्यूबर्ट ने उसकी दोनों बाहें अपने गले में डाल ली हैं और उसको छाती से चिमटा लिया है ताकि वह बेहोश या बेजान आदमी उसके हाथ से छूट न जाय । पाठक ने पहिचान तो अवश्य लिया होगा कि यह बेहोश या बेजान आदमी कौन है ? यदि न पहिचाना हो तो अब पहिचान लें कि यह वही फ्लोरा है जो इस समय ह्यूबर्ट की गोद में पडी है ।

ह्यूबर्ट० । (पास पहुच कर खुशी से) अहा सररिचर्ड ! देखिये, ईश्वर की कृपा से फ्लोरा बच गई ।

सर रि० । जीती है ? धन्य है ईश्वर कि फ्लोरा के प्राण बच गये ।

ट्रूसी जो ऊपर से सब देख रहा था, चिल्ला कर कहने

लगा, "सरमाइलिज, आप सुनते हैं ? फ्लोरा अभी जीती है। (आप ही आप) अच्छा हुआ, अब हमारी जोरू हमको फिर मिलेगी।"

सरमाइलिज ने ब्रूसी को कुछ जवाब न दिया बल्कि अपनी कुर्सी से जिस पर वह बहुत ही रज में डूबा हुआ बैठा था, उठ कर बाहर झपटा और जल्दी जल्दी सीढ़ियां तै कर के नीचे पहुंचा।

सर मा० । हाय ! मेरी फ्लोरा अभी जीती है ? मेरे कलेजे के टुकडे को मुझे जल्दी दिखा दो, (पास पहुँच कर) हाय मेरी बच्ची ! तूने यह क्या किया !!

सर रि०। मैं तुमसे यह पूछता हूं कि तुमने यह क्या गजब किया कि वह बेचारी जान देने को तैयार हो गई, देखो वह कुछ कहना चाहती है। फ्लोरा ! कहो कहो क्या चाहती हो ?

फ्लोरा०। (बहुत ही धीमी आवाज से) आह ! मेरे बाप को कुछ मत कहो मेरी जान अगर गई तो क्या परन्तु मेरे बाप की इज्जत तो बच गई आह

सर रि० । नहीं फ्लोरा ! अब तुम ज्यादा न बोलो तुम बिल्कुल कमजोर हो रही हो हाय ! देखो तो कैसी भोली लड़की है। अच्छा हूबर्ट ! यह लौंडी तैयार है, तुम फ्लोरा को इसकी गोद में दे दो।

फ्लोरा लौंडी के हवाले कर दी गई। अब सब लोग उस

से पानी की बूंदे टपक रही थीं और दो भारी सिकड़ों में वह बंधा हुआ था, जिनमें मोर्चा लग गया था। संदूक में एक ताला भी लगा हुआ था जो करीब करीब गल गया था।"

पाठकों को याद होगा कि जिस समय फ़्लोरा का विवाह होने वाला था, उस समय झील की ओर से एक खुशी की आवाज आ कर कमरे भर में गूंज उठी थी, वह आवाज़ इसी हूवर्ट की थी जो उस समय उस खोये हुए सन्दूक की खोज में, इधर उधर जाल डाल रहा था जिसको वह महीनों से खोज रहा था। जिस समय फ्लोरा ने अपनी आखिरी बात समाप्त की उसी समय वह सन्दूक हूवर्ट को मिल गया था और वह खुशी में चिल्ला उठा था, "वह मारा !!" इस समय उसी सदूक को अपने सामने देख सर माइलिज बोल उठे "यह सन्दूक ! क्या मैं इस समय स्वप्न देख रहा हूँ !"

हूवर्ट०। अच्छा अब आप इसको खोलिये, इसमें दस हजार पाउण्ड हैं, उन्हें निकाल कर इस कम्बख़्त (अर्थात् दूसी) का कर्जा चुका दीजिये।

सर मा०। (ताज्जुब से) मुझको बड़ा आश्चर्य है कि तुम हो कौन ! तुम तो कुछ अजीब तरह के आदमी मालूम होते हो !'

हूवर्ट०। (सिर झुका कर बड़ी नम्रता से) मैं कौन हूं ? क्या आप मुझको एक नीच मछली वाले से कुछ ज्यादा समझते हैं जो हूवर्ट के नाम से पुकारा जाता है ? (आकाश की

ओर देख कर) हे जगदीश्वर ! क्या वह समय अभी तक नहीं आया ?

सर रि० । नहीं वह यही समय है । अच्छा अब आप सब लोग सुन लें कि यह आदमी जो इस समय आप लोगों के सामने खड़ा है और जिसे आप ह्यूबर्ट के नाम से पुकारा करते हैं, यह अब वह नीच मछली वाला नहीं है, बल्कि वह "आर्वन" है, जिसकी मां उसे साल भर की उम्र में साथ ले कर इन्हीं अशर्फियों को लेने के लिये झील के उस पार गई थी और लौटते समय डूब कर लापता हो गई थी ।

सर मा० । (आश्चर्य्य से आंखें फाड़ कर) क्या आर्वन ! कर्नल ब्लण्डफोर्ड का लड़का !

सर रि० । हां हां वही ।

सब लोग ह्यूबर्ट अथवा आर्वन को आंख फाड़ कर देखने लगे । वही आर्वन जो साल भर की उम्र में झील में डूब गया था, इस समय उनके सामने मौजूद था । आर्वन को स्वयम् आश्चर्य था कि सर रिचर्ड को उसका वृत्तान्त कैसे मालूम हो गया !

इतने में ट्रूसी चिल्ला कर बोला, "तो अगर यह कर्नल ब्लण्डफोर्ड का लड़का है तो जरूर यह बागी है । मैं बादशाह चार्ल्स के हुक्म से तुमसे कहता हूं कि तुम इसको पकड़ लो ।"

सर रि० । बस, जरा तबीयत को रोके रहो । यह बादशाही माफी का पर्वाना तैयार है ।